इकाई–3 : बिहारी

संरचना

3.0 कवि परिचय

3.1 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

3.2 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

3.2.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3.2.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

3.2.3 निबंधात्मक प्रश्न

3.3 सारांश

3.4 अभ्यास प्रश्नावली

3.0 कवि परिचय

रामभक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित 'रामचरितमानस' के बाद यदि किसी ग्रन्थ को लोकप्रियता प्राप्त हुई है तो वह बिहारी कृत 'सतसई' है।

'ब्रज भाषा बरनी कविन, बहु विधि बुद्धि विकास।
सब की भूषण 'सतसई', करी बिहारी दास।।
जो कोउ रस–रीति को, समझौ चाहे सार।
पढ़े बिहारी–सतसई, कविता को सिंगार।।'

मानस के बाद सतसई पर ही अनेक टीकाएँ निर्मित हुई। 'सतसई' का जो क्रम आज तक प्रचलित है वह आजमशाह ने बँधवाया था।

रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवियों में बिहारी का स्थान अन्यतम माना गया है। पंडित अम्बिका दत्त व्यास ने 'बिहारी विहार' में निम्नलिखित दोहा लिखकर बिहारी के जीवन व जन्म पर प्रकाश डाला है –

संवत जुग सर रस सहित, भूमि रीति गिन लीन।
कार्तिक सुदि बुध अष्टमी, जन्म हमें विधि दीन।।

बिहारी का जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर गाँव में 1603 के लगभग हुआ था। वे चौबे माथुर थे। संभवतः 1662 तक वे जीवित रहे। अनेक विद्वानों ने बिहारी को आचार्य केशवदेव का पुत्र स्वीकार किया है। उनकी बाल–वय बुंदेलखण्ड में व्यतीत हुई। विवाह के पश्चात् वे मथुरा आ गये। कुछ समय पश्चात् मुगल बादशाह शाहजहाँ के निमन्त्रण पर वे आगरा चले गये। वहीं पर बिहारी का परिचय अनेक राजाओं से हुआ और इसी परिचय के परिणामस्वरूप बिहारी जयपुर नरेश जयसिंह के दरबार में आकर रहने लगे। जयपुर नरेश को अपनी नव विवाहिता पत्नी के प्रेमपाश में अतिशय आबद्ध देखकर उन्हें अपने कर्त्तव्य का अहसास दिलाने के लिये यह प्रसिद्ध दोहा लिखा –

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अलि कली ही सौं बन्ध्यौ, आगे कौन हवाल।।

ऐसा कहा जाता है कि तभी से महाराज जयसिंह ने उनसे ऐसे ही सरस दोहे रचने का आग्रह किया। उन्हें ऐसे एक दोहे पर एक अशर्फी इनाम में मिलने लगी। इस प्रकार उन्होंने सात सौ दोहों की रचना की गई जो आगे चलकर 'सतसई' के नाम से विख्यात हुई। बिहारी ने यद्यपि एक ही कृति लिखी किन्तु यही एक रचना इतनी सुविख्यात हुई कि रीतिकाल की किसी भी रचना को यह सम्मान प्राप्त नहीं हो सका। इसी प्रकार महाराज

Jan Vishwa Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

जयसिंह जब दक्षिण भारत में मुगलों की ओर से शिवाजी से लड़ने के लिये गये तो कवि बिहारी ने प्रबोधित किया–

स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा, देखि बिहंग बिचारि।
बाज पराये पानि पर, तू पंछीनु न मारि।।

एक समय था जब बिहारी और देव को लेकर हिन्दी में घोर वाद–विवाद हुआ था। पं. पद्मसिंह ने बिहारी को श्रेष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा की और 'नवरत्न' में मिश्र बन्धुओं ने देव को। इस वाद–विवाद से हिन्दी में तुलनात्मक समालोचना को प्रोत्साहन मिला। किन्तु पं. रामचन्द्र शुक्ल ने इसे निरर्थक बताया था। लाला भगवानदीन (बिहारी और देव) ने पं. पद्मसिंह शर्मा का, पंडित कृष्ण बिहारी मिश्र (देव और बिहारी) ने मिश्र बन्धुओं का समर्थन किया। वास्तव में बिहारी और देव दोनों एक ही युग के सामाजिक और सांस्कृतिक पीठिका को सम्भाले हुए कवि थे। बिहारी चमत्कार के पोषक थे और देव प्रधानतः रस के पोषक थे। देव में श्रृंगार के अतिरिक्त और भी रसों का परिपाक हुआ, उनका क्षेत्र बहुत व्यापक था। भाषा, व्याकरण, छन्द, अलंकार आदि की दृटि से दोनों की निष्पक्ष तुलना करने पर यह कहा जा सकता है कि यदि बिहारी देव की अपेक्षा अधिक उत्तम शिल्पी और शैलीकार हैं तो रस और भावों की व्यापकता की दृष्टि से देव आगे हैं।

बिहारी की 'सतसई' एक मुक्तक रचना है इसमें दोहा छन्द का प्रयोग किया गया है। "Brevity is art" अंग्रेजी का यह कथन पूर्णतः बिहारी के दोहों पर घटित होता है –

सतसइया के दोहरे, ज्यो नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करै गम्भीर।।

बिहारी ने 'गागर में सागर' भरा है। इनके दोहों के दो चरण अन्य दिग्गज कवियों के कवित्त–सवैयों के चार–चार चरणों से भी अधिक प्रभावशाली हैं, साथ ही इनके दोहों में कवि की बहुज्ञता का परिचय मिलता है। भाव–व्यंजना और शब्द विन्यास की दृष्टि से यह ग्रन्थ अपूर्व है। पद–मैत्री का एक उदाहरण –

गडे बडे छवि छाकु छकि, छिगुनी छोर छुटै न।
रहे सुरंग–रंग रंगी उही, नहँदी गँहदी नैन।।

प्रतिभाशाली होने के कारण बिहारी का काव्य तत्कालीन परिस्थितियों के प्रभाव से पूर्ण भी दिखाई देता है और श्रृंगार–रस के सौन्दर्य से सिक्त भी। बिहारी श्रृंगारी कवि थे किन्तु उनकी सतसई में भक्ति, नीति, वैराग्य के दोहे भी मिलते हैं, प्रत्येक दोहा काव्यात्मक और कलात्मक है।

बिहारी के शब्दालंकारों से अर्थ की रमणीयता उत्पन्न होती है और रसोद्रेक होता है, यद्यपि कहीं–कहीं पर अतिशयोक्ति और कृत्रिमता आ जाने से प्रेम रस की पूर्ण निष्पत्ति नहीं हो पाई है। भावों का मानसिक सुकुमार, जिनके पीछे एक सम्पूर्ण घटना छुपी हुई हो इतने संक्षेप में इतना सरस चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है –

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करे, भौंहनि हँसे, दैन कहें नटि जाय।।
नासा मोरि नचाई दृग, करी कका की सौंह।
काँटे सी कसके हिये, गड़ी कटीली गौंह।।

मानवी प्रकृति का उन्होंने सूक्ष्म निरीक्षण किया था और एक छोटा सा दोहा पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। वस्तु वर्णन के अन्तर्गत उन्होंने शोभा, सुकुमारता, नेत्र, विरह आदि के सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किये हैं किन्तु विरह वर्णन में उन्होंने कहीं–कहीं पर खिलवाड़ किया है –

इत आबत चलि जात उत, चली छ सातक हाथ।
चढी हिण्डोरे–सी रहे, लगी उसासन साथ।।

कल्पना शक्ति के साथ–साथ बिहारी की रचना में समास शक्ति भी है। उनकी मुक्तक–कला पूर्ण सफल रही है। इनके द्वारा अनुभावों वं अंग–चेष्टाओं की सृष्टि भी अत्यन्त उच्च कोटि की हुई है। उन्होंने उक्ति–कौशल,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कान्ति–सुकुमारता, विरह आदि के सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये हैं। शब्द–वैचित्र्य के स्थान पर कवि ने अलंकारों का अनुपम विधान रखा है।

बिहारी के दोहे ' आर्यासप्तशती' (संस्कृत में) और गाथा सप्तशती (प्राकृत में) की छाया पर निर्मित हुए हैं किन्तु उनमें अपनी स्वयं की मौलिकता और सजीवता है। बिहारी का साहित्य ब्रज भाषा में है। यद्यपि उनकी 'सतसई' लक्षण ग्रन्थ के अनुसार नहीं हैं फिर भी उनके दोहे रस और नायक–नायिका–भेद के लक्षणों के अनुसार रखे जा सकते हैं। उनकी भाषा और चित्र–विधान पर फारसी का भी प्रभाव है।

समसामयिक परिस्थितियों में बिहारी पर की जाने वाली टिप्पणियाँ उनको यथार्थवादी और स्पष्ट वक्ता के रूप में प्रस्तुत करती हैं। काव्यकला की दृष्टि से वे अपने समय के सिरमौर कवि थे।

3.1 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परे, श्याम हरित दुति होई।।

शब्दार्थ – भव = संसार, बाधा = संकट, नागरि = चतुर, दुति = चमक।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' के बिहारी पाठ से अवतरित है जिसे 'सतसई' से लिया गया है। इसमें कविवर बिहारी ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना के प्रारम्भ में मंगलाचरण के रूप में राधा रानी के रूप सौन्दर्य की महिमा का वर्णन किया है और अपनी सांसारिक विपदाओं को दूर करने की अनुनय–विनय की है।

व्याख्या – कवि बिहारी अपनी आराध्या राधिका से विनती करते हुए कहते हैं कि हे चतुर राधिका जी! आप मेरे सम्पूर्ण सांसारिक कष्टों का निवारण करें। कवि राधा जी के रूप सौन्दर्य की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हे राधा रानी! आपके सुन्दर अनुपम शरीर के प्रतिबिम्ब मात्र के स्पर्श से भगवान् श्री कृष्ण की श्याम आभा भी हरित रंग की हो जाती है।

प्रस्तुत दोहे के अन्य दृष्टिकोण भी रहे हैं –

(I)

कवि बिहारी कहते हैं कि वे चतुर राधा जी मेरी समस्त सांसारिक विपदाओं व बाधाओं को दूर करें ताकि मेरा जीवन लक्ष्य अर्थात् मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो जाये। वे राधाजी ऐसी हैं जिनके शरीर की परछाई पड़ने से प्रभु श्रीकृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं। परम ब्रह्म स्वरूप श्रीकृष्ण जब राधाजी की परछाई मात्र से प्रसन्न हो जाते हैं तो मेरी विनती सुनने पर राधाजी की कृपा से मेरे जीवन की सम्पूर्ण सांसारिक बाधाओं का शमन भी अवश्य होगा।

(II)

कविवर बिहारी कहते हैं कि वे राधाजी मेरी सांसारिक विघ्न–बाधाओं को दूर करें जिनका ध्यान करने मात्र से समस्त प्रकार के दुःख व पाप स्वतः नष्ट हो जाते हैं और पुण्य रूप में बदल जाते हैं (प्रतिकार्थ रूप में श्याम व हरित शब्द क्रमशः दुःख–पाप तथा सुख–पुण्य प्राप्ति है।)

(III)

कवि बिहारी कहते हैं राधाजी का गोरा बदन स्वर्णिम आभा बिखेरने वाला है जिसकी कान्ति प्रभु कृष्ण के श्याम वर्ण पर पड़ती है तो वे भी हरित युक्त हो जाते हैं ऐसी चतुर राधिका मेरी सम्पूर्ण सांसारिक बाधा को दूर करें। (सुनहरे या पीले रंग के साथ नीला रंग मिल जाता है तो वहाँ हरितिमा समाहित हो जाती है।)

विशेष

1. बिहारी 'सतसई' के अधिकांश दोहे नायक–नायिका प्रधान हैं, अतः मंगलाचरण में राधा–कृष्ण के युगल–स्वरूप का उल्लेख किया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. बिहारी राधा–वल्लभ सम्प्रदाय से प्रभावित थे जिसकी वजह से उन्होंने सर्वप्रथम उपासना का संकेत दिया है।
3. प्रस्तुत दोहे में श्लेष, काव्यलिंग और रूपकातिशयोक्ति अलंकारों का प्रयोग किया है।
4. श्रृंगार रस के साथ–साथ भाव–काव्य का चित्रण है।
5. हरित द्रुत (हरा होना) मुहावरे का सुन्दर प्रयोग
6. विहारी की काव्य प्रतिभा व भाषाधिकार दोनों का परिचय इससे मिल जाता है।

(2)

मोर मुकुट की चन्द्रिकनु, यों राजत नन्द नन्द।
मनु ससि–सेखर की अकस, किय सेखर सत चन्द।।

शब्दार्थ – चन्द्रिकनु = चन्द्रमा से, यों = इस प्रकार, राजत = शोभायमान, नन्द नन्द = श्रीकृष्ण, ससिसेखर = महादेव, अकस = प्रतिस्पर्धा।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य–पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी द्वारा विरचित 'सतसई' के दोहों से उद्धृत हैं जिसमें कविवर ने प्रभु श्री कृष्ण की अनुपम अलंकृत रूप सुन्दरता का रोचक वर्णन किया है।

व्याख्या – जब एक गोपी ने प्रभु श्रीकृष्ण के दर्शन किये तो वह उनके अलौकिक रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हो गई। वह अपनी अन्तरंग सखी से इस अनुपम व मनमोहक सुन्दरता का वर्णन करती हुई कहती है कि हे सखी! नन्द के पुत्र कृष्ण अपने मस्तक पर शत्–शत् चन्द्रमाओं से युक्त मोर पंखों का मुकुट धारण किये हुए हैं जो अत्यन्त शोभायमान लग रहे हैं। वे ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानों शशिधर शिव शंकर भगवान् से प्रतिस्पर्धा करने के लिये उन्होंनें शतचन्द्र अपने मस्तक पर धारण कर लिया हो अथवा ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानों श्रीकृष्ण रूपी कामदेव ने शिवजी की ईर्ष्या के कारण सैकड़ों चन्द्रमा धारण कर लिये हों।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में बताया है कि श्रीकृष्ण रूपी कामदेव ने अपने मस्तक पर सैकड़ों चन्द्र धारण कर लिये हैं क्योंकि शिव और कामदेव एक दूसरे से ईर्ष्या भाव का अनुभव करते हैं क्योंकि तपस्या (शिव) वासना (कामदेव) एक दूसरे के विरोधी हैं। शिव के माथे पर केवल एक ही चाँद हैं।
2. शतचन्द्रों से श्रीकृष्ण का रूप सौन्दर्य और अधिक मनमोहक बन पड़ा है।
3. प्रस्तुत अंश में अनुप्रास, व्यतिरेक, उत्प्रेक्षा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है।
4. इस प्रकार का भाव 'राम–सतसई' में भी वर्णित है।

(3)

तंत्री–नाद कवित्त–रस, सरस राग, रति रंग।
अनबूड़े, बूड़े तरे, जै बूड़े सब अंग।।

शब्दार्थ – तंत्री = वीणा, नाद = आवाज (स्वर), रति–रंग = प्रेम रंग, बूड़े = डूबना, तिरे = पार हो गये।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य–पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जो कविवर बिहारी द्वारा विरचित 'सतसई' से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में कवि ने ललित कलाओं का महत्त्व बताकर उन्हें जीवन का सार–तत्त्व माना है।

व्याख्या – कवि बिहारी कला के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि चाहे वीणा की स्वर लहरी हो या किसी कवित्त की रस तरंगिणी हो अथवा प्रेम की अनुभूति हो। जो इनके रंग में रंग जाता है अथवा इनके आनन्द में सराबोर हो जाता है अथवा इसमें पूर्ण रूपेण डूब जाता है। वे अपनी सम्पूर्ण सांसारिक बाधाओं को आसानी से पार कर जाते हैं अर्थात् उनका जीवन आनन्दमय बन जाता है। किन्तु जो लोग इनके आनन्द रंग में नहीं डूबे हैं अर्थात उसका सतही ज्ञान प्राप्त करते हैं। वे इस संसार सागर में फंसकर ही डूबे हुए हैं।

मधुर संगीत, काव्य का रसानन्द और सुन्दर स्त्री के प्रेमपाश में जो व्यक्ति नहीं डूबे हैं या उनका पूर्ण आनन्द प्राप्त नहीं किया है, उनका जीवन निष्फल माना जाता है वे तो एक प्रकार से इस भव सागर में डूबे हुए के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

समान हैं। किन्तु जिन लोगों के अंग–प्रत्यंग इन आनन्ददायक आस्वादन कर चुके हैं, सरस अनुभूति प्राप्त कर चुके हैं समझो कि वे संसार में डूबे हुए होने पर भी संसार से तर गये हैं।

विशेष

1. संगीत या काव्य कला अथवा कामिनी सुख सभी कष्टों या संतापों में राहत प्रदान करते हैं।
2. भावात्मक एकता यदि इन सुखों में समाहित की जाये तब ही ब्रह्मानन्द सहोदर रस का आस्वादन किया जा सकता है।
3. इनके आस्वादन में अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है।
4. 'अनबूडे–बूडे' में विरोधाभास है।
5. रंग में श्लेष व बूडे–बूडे में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार द्वारा चमत्कार उत्पन्न किया गया है।
6. भाव साम्य– "साहित्य संगीत कला विहीनः ।
   सक्षात् पशुः पुच्छ विषाण हीनः।" – तुलसी

(4)

कीनै हूँ कोटिक जतन, अब कहि काढै कौन।
भो मन मोहन–रूप मिलि, पानी मैं कौ लौन।।

शब्दार्थ – कोटिक = करोड़ों, जतन = प्रयास, काढे = निकालना, लौन = नमक।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य–पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने एक गोपिका की मनःस्थिति का चित्रण किया है।

व्याख्या – कविवर बिहारी एक गोपिका की कृष्ण प्रेमजनित मनःस्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मेरा मन श्रीकृष्ण के मनमोहक रूप सौन्दर्य का अवलोकन कर उसमें इस प्रकार विलीन हो गया है कि करोड़ों प्रयास करने पर भी अब उसे पृथक नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार पानी में मिले हुए नमक को कई प्रयासों द्वारा भी पानी से अलग नहीं किया जा सकता है इसी प्रकार मेरा मन कृष्ण के रूप लावण्य में समाहित हो चुका है।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में कवि ने एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यंजना की है।
2. अनुप्रास और उदाहरण अलंकार का सुन्दर प्रयोग है।

(5)

अरे हंस या नगर में, जैयो आपु विचारि।
कागनि सौं जिनि प्रीति करि, कोकिल दई बिडारि।।

शब्दार्थ – या = इस, कागनि सो = कौओं से, कोकिल = कोयल, बिडारि = भगा दिया।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य–पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने किसी विद्वान या गुणवान व्यक्ति को निर्गुणी व अज्ञानी लोगों के बीच जाने से रोकने की प्रेरणा प्रदान की है।

व्याख्या – कविवर बिहारी हंस के माध्यम से ज्ञानी व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे हंस! इस नगर में प्रवेश करने से पहले तुम थोड़ा विचार अवश्य कर लेना। इस नगर में ऐसे लोग रहते हैं जिन्होंने कौओं से प्रेम करके अनेक कोयलों को भगा दिया है। अर्थात् यहाँ पर ज्ञान सम्पन्न पवित्र आत्माओं को सम्मान नहीं दिया जाता है और गुणविहीन व दुष्चरित्र लोगों का अज्ञानियों द्वारा आदर–सत्कार दिया जाता है अतः ऐसे समाज में अज्ञानियों के बीच में रहना कहाँ तक उचित व अनुचित है इस बारे में जरा सोच–समझ कर विचार कर लेना चाहिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में हंस को शुभ्र वर्ण अर्थात् ज्ञानी अर्थात् पवित्रात्मा का प्रतीक माना है। कौआ को श्याम वर्ण व दुरात्मा का प्रतीक माना है।
2. कवि ने अल्प शब्दों में विद्वान की विद्वता व गुणी की गुणग्राहिता का सुन्दर रूप प्रस्तुत कर अज्ञानियों से दूर रहने का सुझाव दिया है।
3. अन्योक्ति अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

(6)

यह बरियाँ नहीं और की, तू करिया वह सोधि।
पाहन–नाव चढाइ जिहिं, कीने पार पयोधि।।

शब्दार्थ – बरियाँ = बड़ियाँ, करिया = पतवार पकड़ने वाला, सोधि = खोजना, जिहिं= जिन्हें, पाहन = पत्थर।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी पाठ से अवतरित है जिसमें कविवर बिहारी ने बताया है कि एक सच्चा गुरु अपने शिष्य अथवा साथी को मोक्ष प्राप्ति के मर्म को स्पष्ट कर रहा है।

व्याख्या – कवि बिहारी कहते हैं कि बस एक मात्र प्रभु की ही शक्ति ऐसी है जो हमें इस भव सागर से मुक्ति दिला सकती है। अतः हे मन! तू उस कर्णधार प्रभु की खोज में अपने आप को उत्सर्ग कर दे जो अपनी महिमा से पत्थर की नाव बनाकर संसार–सागर से पार करा सकता है। जिस प्रकार नल और नील ने प्रभु श्रीराम की कृपा से शिला खण्डों का सेतु बनाकर सारी वानर सेना को पार करा दिया था।

कवि के अनुसार जीवन के अंतिम समय में हमें प्रभु का स्मरण अवश्य करना चाहिये। जिससे कि हम सभी पापों का शमन् कर इस संसार के आवागमन से मुक्त हो जायें अर्थात् हमें मुक्ति मिल सके।

विशेष

1. जिस पर प्रभु की कृपा होती है वह पाहन की नाव में बैठकर भी संसार–सागर को पार कर सकता है।
2. जीवन के अंतिम समय में मनुष्य को परम पिता परमेश्वर का स्मरण अवश्य करना चाहिये।
3. प्रस्तुत दोहे में कवि ने अनुप्रास, रूपक और समासोक्ति अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है।

(7)

कैसे छोटे नरनु तैं, सरत बडनु के काम।
मढ्यो दमामौ जातु क्याँ, कहि चूहे कै चाम।।

शब्दार्थ – नरनु = मनुष्यों के, सरत = पूरा होना, दमामो =नगाड़ा, चाम = चमड़ी।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि बिहारी ने बड़े लोगों के बड़े कामों का महत्त्व स्पष्ट किया है।

व्याख्या – कविवर बिहारी कहते हैं कि बड़े लोगों के बड़े कार्य छोटे लोगों के द्वारा कैसे सम्पन्न हो सकते हैं? जिस प्रकार से चूहे की चमड़ी से बड़ा नगाड़ा नहीं मढ़ा जा सकता है उसी प्रकार छोटे लोगों के द्वारा बड़े काम सम्पन्न नहीं हो सकते हैं।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में बड़े लोगों के बड़े कार्यों का महत्त्व स्पष्ट किया है।
2. दोहे में कवि ने अर्थान्तरन्यास और काकु वक्रोक्ति अलंकार का प्रयोग किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(8)

दिन दसु आदरु पाइ कै, करि लैं आपु बखानु।
ज्यों लगि काग सराध–पखु, तौ लगि तौ सनमानु।।

शब्दार्थ – आदरु = सम्मान, बखानु = वर्णन करना, सरधपखु = श्राद्धपक्ष।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के 'बिहारी' नामक पाठ से अवतरित है, जिसमें कवि बिहारी ने एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति का वर्णन किया है जो कि अपात्र होते हुए भी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा है।

व्याख्या – कविवर कौए को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि कुछ समय के लिये आदर–सम्मान मिलने पर तू स्वयं चाहे कितनी ही अपनी प्रशंसा कर या उसका अनुभव कर। क्योंकि इन दिनों (श्राद्ध–पक्ष) तेरा हर कोई सम्मान करता है। किन्तु जैसे ही यह तेरा अनुकूल समय कुछ दिनों बाद समाप्त हो जायेगा वैसे ही तुझको कोई नहीं पूछेगा। इसी प्रकार अपात्र व्यक्ति का सम्मान समाज में सदैव नहीं रहता है।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में स्पष्ट किया है कि जब किसी अपात्र को समाज में सम्मान मिलने लगता है तो वह स्वयं अपनी प्रशंसा करने लगता है यह अपात्र की पहचान होती है।
2. प्रस्तुत दोहे में अन्योक्ति व अनुप्रास अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है।

(9)

कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुम हूँ लागी जगत् गुरु, जग–नायक जग–बाय।।

शब्दार्थ – टेरतु = पुकारना, दीन = गरीब, जग–वाय = संसार की हवा।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि बिहारी ने एक मुँह लगे सेवक की तरह अपने आराध्य से अपनी दास्य भक्ति को विवेचित किया है।

व्याख्या – कविवर बिहारी कहते हैं कि हे प्रभु श्री कृष्ण! मैं कब से आपको दीन–वाणी से पुकार रहा हूँ किन्तु आप हैं कि मेरी एक भी बात को न तो सुनते हैं और न ही मेरी सहायता करने को तैयार होते हैं और आप मेरी विनती को अनसुनी करने की कोशिश कर रहे हैं। आपके इस रूखेपन से तो ऐसा लगता है कि जैसे आपको इस संसार की हवा लग गई है।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में कवि ने व्यंग्यात्मक मुहावरे 'संसार की हवा लगना' का प्रयोग किया है।
2. अपने आराध्य के प्रति तीखापन और स्पष्टवादिता को प्रकट किया है।
3. दोहे में वीप्सा, दीपक और काव्यलिंग अलंकारों का प्रयोग किया गया है।
4. लक्षणा शब्द शक्ति का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(10)

नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यों मनौ तारन–बिरदु, बारक बारनु तारि।।

शब्दार्थ – नीकी = भली, अनाकनी = आनाकानी, गुहारि = पुकार, बारक = एक बार, बारनु = हाथी।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने अपने आराध्य देव को भक्ति भाव से उपालम्भ देने का प्रयास किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व्याख्या – कवि बिहारी कहते हैं कि हे भगवान्। आपने तो विनती को अच्छी तरह से अनसुनी कर दिया है। मैं बार–बार आपको पुकारता रहा किन्तु मेरी सभी पुकारों का आप पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ा। आप मेरे प्रति पूरी तरह से उदासीन बने हुए हो। आपकी इस उदासीनता से तो मुझे ऐसा लगता है मानों एक बार मगर के चंगुल में फँसे गजराज का उद्धार क्या कर दिया, आपने तो संसार के प्राणियों का उद्धार करने के यश को ही भुला दिया है। एक बार भगवान् श्रीहरि ने गजराज का उद्धार कर तीनों लोकों में अपना यश प्राप्त कर लिया। अब तो ऐसा लगता है वे इस एक बार के सुयश को प्राप्त करके ही संतुष्ट हो गये हैं और संसार के किसी भी प्राणी की विनती ही नहीं सुन रहे हैं। अतः कविवर बिहारी कहते हैं कि प्रभु श्रीहरि को सभी भक्तों की पुकार सुनकर उन्हें संसार सागर से मुक्ति दिलानी चाहिये।

विशेष

1. मगरमच्छ से गजराज की रक्षा करने के लिये भगवान् श्रीहरि नंगे पैरों पधारे थे। प्रस्तुत अन्तर्कथा के माध्यम से कवि ने भगवान् से विनती की है।
2. अनुप्रास, वक्रोक्ति, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है।

(11)

प्रकट भये द्विज–राज–कुल, सुवस बसे ब्रज आई।
मेरो हरौ कलेस सब, केसव केसव राइ।।

शब्दार्थ – द्विजराज = श्रेष्ठ ब्राह्मण (चन्द्रमा), सुवस = स्वेच्छा, केसव = कृष्ण, केसवराय = कवि के पिता का नाम।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने अपना परिचय दिया है और अपनी भक्ति भावना को स्पष्ट किया है।

व्याख्या – कविवर बिहारी कहते हैं कि केसव (कृष्ण) अपने पिता (केसवराय) मेरे सम्पूर्ण सांसारिक कष्टों का शमन करें जो अपनी इच्छा से ही ब्रज में आकर बसे हैं जिनका जन्म द्विजराज कुल (श्रेष्ठ चन्द्र वंश) में हुआ है।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में 'द्विजराज' और 'सुवस' में श्लेष अलंकार है और स्पष्ट किया है कि उनका जन्म एक श्रेष्ठकुल अर्थात् द्विजराज कुल अर्थात् चन्द्रवंश में हुआ है। कवि के पिताजी का नाम केसवराय था, वे स्वेच्छा से ब्रज में आकर बस गये थे।
2. कुछ विद्वानों ने केशवराय का आशय आचार्यकवि केशवदास माना है और बिहारी को केशव का पुत्र माना है। किन्तु यह तथ्य पूर्णतः भ्रामक है, क्योंकि बिहारी के पिता उत्तर प्रदेश के गोविन्दपुर निवासी थे जो कालान्तर में मथुरा आकर बस गये थे।
3. प्रस्तुत दोहे में पुनरूक्तिप्रकाश, यमक, श्लेष और रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।
4. सामासिक शैली और समाहार शक्ति का सुन्दर समन्वय हुआ है।

(12)

मोहि तुम्हें बाढी बहस, को जीते यदुराज।
अपने–अपने बिरद की, दुहूँ निबाहत लाज।।

शब्दार्थ – मोहि = मुझे, बाढी = बढ गई, बहस = विवाद, को = कौन, यदुराज = श्रीकृष्ण, बिरद = अधम, विबाहत = निर्वाह, लाज = इज्जत।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने अपनी भक्ति, निष्ठा एवं हठ को प्रकट कर अपने आराध्य देव से अपने जीवन के उद्धार की कामना की है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

व्याख्या – कविवर बिहारी अपने आराध्यदेव से अनुनय–विनय करते हुए कहते हैं कि हे यदुवंश शिरोमणि श्रीकृष्ण! आपके और मेरे बीच यह विवाद निरन्तर बढ़ रहा है कि हम दोनों में से कौन विजयी रहता है? क्योंकि आप अपने विरद की आन को बनाये हुए हैं और मैं अपने विरद की लाज बचाने में लगा हुआ हूँ अर्थात् मैं अपनी अधमता और दुष्टता का निर्वाह करने में लीन हूँ, आप अधमों और दुष्टों का उद्धार करने में लगे हुए हो। देखना तो अब यह है कि कौन अपने लक्ष्य का सही ढंग से निर्वाह कर पाता है? अर्थात् मेरे उद्धार पर ही आप विजयी रहेंगे।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में कवि ने दास्य–भाव की भक्ति को स्पष्ट किया है।
2. प्रस्तुत दोहे में कवि की समाहार शक्ति परिलक्षित है।
3. वीप्सा, आक्षेप और प्रेय अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(13)

समै पलट पलटै प्रकृति, को न तजै निज चाल।
भौ अकरून करुना करौ, इहिं कपूत कलि काल।।

शब्दार्थ – पलट = परिवर्तन, निज = अपनी, चाल = स्वभाव, अकरुन = निष्ठुर, कपूत = कुपुत्र।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के 'बिहारी' नामक पाठ से लिया गया है, जिसमें कवि ने समय की परिवर्तनशीलता के साथ प्रभु श्रीहरि को भी अपना स्वभाव बदलने वाला बताया है।

व्याख्या – कवि बिहारी कहते हैं कि जब समय परिवर्तन होता है तो प्रकृति के नियम भी परिवर्तित हो जाते हैं और समय का परिवर्तन कभी किसी को नहीं छोड़ता है अर्थात् समय के साथ–साथ सब कुछ बदल जाता है। कवि बिहारी इसी तथ्य को आक्षेपवत कहते हैं कि हे प्रभु श्री कृष्ण! इस कलियुग के आते–आते आपने भी अपने करुणाकर स्वभाव को बदल लिया है और आप निर्मम हो गये हैं। हे भगवान्! आप तो करुणानिधान हैं, सब पर दया करने वाले हैं किन्तु लगता है कि समय के परिवर्तन ने आपको भी प्रभावित कर दिया है और आप करुण रूप को बदल चुके हैं।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में कवि ने समय के परिवर्तन के माध्यम से अपने आराध्य को उलाहना दिया है।
2. प्रस्तुत दोहे में अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, अर्थान्तरन्यास अलंकार का सुन्दर समन्वय हुआ है।
3. भाव साम्यः– "कब लों टेरत दीन रट होत नस्याम सहाय।
   तुम हूं लागी, जगतगुरु, जगनायक जगवाइ। (बिहारी)

(14)

ज्यों–ज्यों बढति विभावरी, त्यों–त्यों बढत अनन्त।
ओक–ओक सब लोक सुख, कोक–सोक हेमन्त।।

शब्दार्थ – विभावरी = रात्री, ओक = घर, कोक = चकवा, अनन्त = जिसका अन्त न हो, सोक = दुःख।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के 'बिहारी' नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने मानव जीवन में निहित सुख–दुःख की स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या – कविवर बिहारी हेमन्तकालीन रात्रि बेला का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जैसे–जैसे इस ऋतु में रात बढ़ती जाती है वैसे–वैसे ही प्रत्येक घर में नायक–नायिकाओं के रात्रि सुख (रति–क्रिया) में वृद्धि होती जाती है और चक्रवाक पक्षी की पीड़ा बढ़ती जाती है। अर्थात् हेमन्तकालीन रात्रि लम्बी होती है तो नायक–नायिकाओं को रात्री में रति–क्रीड़ा का लम्बा समय मिल जाता है, अधिक अवसर भी मिल जाते हैं और उनका यौवन रति सुख बढ़ जाता है। किन्तु चक्रवाक पक्षी रात्रि में अपनी प्रिया से बिछुड़ जाता है और दीर्घ रात्रि होने के कारण उसका

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विरह संताप भी दीर्घकालीन होता है इसलिये उसे लम्बी रात काफी दुःखदायी होती है। अतः हेमन्त की रातें जहाँ सुख में वृद्धि करने वाली होती हैं, वह दूसरी ओर दुःखदायी भी है।

विशेष

1. रात्रि की अवधि बढ़ने से रति सुख व विरह दुःख की उद्दीप्तता को स्पष्ट किया है।
2. एक ही समय में दो दो भावों की वृद्धि का चमत्कार है।
3. पुनरुक्ति प्रकाश, दीपक और उद्दीपन विभाव का प्रयोग हुआ है।

(15)

बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमानु।
भलौ भली कह छोड़िय, खोटे ग्रह–जपु–दानु।।

शब्दार्थ – तन = शरीर, ताही को = उसी को, सनमानु = आदर, खोटे = बुरे आचरण वाले।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने सज्जनों की उपेक्षा करने वाले समाज व लोक व्यवहार का सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या – कवि बिहारी वर्तमान लोक–व्यवहार का चित्रण करते हुए कहते हैं कि तत्कालीन समाज में जिस व्यक्ति की रग में बुराई भरी हैं या खोट हो अर्थात् जो दुष्ट–प्रकृति का होगा उसी को अधिक सम्मान दिया जायेगा और सज्जनों का आदर नहीं किया जाता है बल्कि उनकी उपेक्षा की जाती है। जिस प्रकार अच्छे ग्रहों की कोई परवाह नहीं करता है और क्रूर या कुटिल ग्रहों (जैसे शनि, राहु केतु आदि) की शांति के लिये अनेक प्रकार के प्रयास या अनुष्ठान किये जाते हैं। उनके लिये जप–दान–पूजा–अर्चना आदि की जाती हैं।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में कवि ने स्पष्ट किया है कि दुष्ट लोग जन–सामान्य को भयभीत करते हैं और यही भय उन्हें सम्मान दिलाता है और सज्जनों की उपेक्षा कर देने पर जन–सामान्य भयभीत नहीं होता है।
2. ग्रह–दशा का प्रयोग कर कवि ने दृष्टान्त अलंकार को काम में लिया है।
3. क्रूर ग्रहों की शांति के लिए जप और दान कराने की बात कहना बिहारी को जयोतिष एवं हिन्दू संस्कृति का ज्ञाता सिद्ध करता है।

(16)

अति अगाधु अति ओथरौ, नदी कूप सरु बाई।
सो ताकौ सागरु जहाँ, जाकी प्यास बुझाई।।

शब्दार्थ – अगाधु = गहरा, ओथरो = उथला, सरु = तालाब, बाई = बावड़ी।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी पाठ से लिया गया है जिसमें कवि ने स्पष्ट किया है कि जहाँ सच्चा प्रेम होता है वहीं पर संतुष्टि होती है और जहाँ संतुष्टि है, वहीं सच्चा प्रेम है।

व्याख्या – बिहारी जी कहते हैं कि नदी, तालाब बावड़ी आदि में चाहे गहराई पर पानी हो या बिल्कुल उथला हुआ है इससे कोई तात्पर्य नहीं है किन्तु इन साधनों से प्यासे की प्यास बुझती है तो इनका महत्त्व किसी सागर से कम नहीं हो सकता है। अर्थात् मन को जो अच्छा लगता है वही उसके लिए सबसे अधिक उपयोगी और सुन्दर होता है।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में संतुष्टि प्रदान करने वाली वस्तु को ही अधिक महत्त्वपूर्ण बताया है।
2. अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, उदाहरण अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है।
3. संसार उपयोगिता देखता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(17)

मरतु प्यास पिंजरा परयो, सुवा समै के फेर।
आदरु दे दे बोलियतु, बायस बलि के बेर।।

शब्दार्थ – सुवा– तोता, आदरु– सम्मान, बोलियत– बुलाया जाता है, बायस– कौआ।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से लिया गया है जिसमें कवि ने समय की प्रधानता व स्वार्थी व्यवहार का वर्णन किया है।

व्याख्या – बिहारी कहते हैं कि समय विशेष पर निकृष्ट व्यक्ति या वस्तु का सम्मान होने लगता है और उत्कृष्ट वस्तु या व्यक्ति की उपेक्षा हो जाती है यह सब बलिहारी समय की है। एक समय (श्राद्धपक्ष) ऐसा आता है कि तोता पिंजरे में पड़ा–पड़ा प्यास से परेशान होता है और कौए को सम्मान सहित बुलाया जाता है और उसे पकवानों के ग्रास खिलाये जाते हैं। अर्थात् समय की प्रधानता से व्यक्ति या संसार का आचरण स्वतः बदल जाता है और जिससे स्वार्थ की सिद्धि होती है उसका आदर सत्कार किया जाता है।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे में अन्योक्ति, अनुप्रास और वीप्सा अलंकार का प्रयोग किया है।

(18)

तौ लगि या मन–सदन में, हरि आवै किहिं बाट।
विकट जटै जौ लगु निपट, खुलै न कपट कपाट।।

शब्दार्थ – तौ लगि = तब तक, सदन = घर, किहिं = किस, वाट = प्रतिक्षा, विकट= मजबूत, जटै = जुडे हुए, कपाट = द्वार।

प्रसंग – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने ईश्वर भक्ति के लिये मन की शुद्धि और कपटी आचरण से रहित मन पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या – कवि बिहारी कहते हैं कि मन रूपी घर में भगवान् तब तक नहीं पधार सकते हैं जब तक कि इसके मुख्य द्वार पर कपट रूपी किवाड़ लगे हुए हैं अर्थात् जिस व्यक्ति के मन में कपट होगा, छल होगा उसे ईश्वर की प्राप्ति कभी भी नहीं होगी और कपट रहित मन में सदा ईश्वर का निवास होगा। अतः भक्ति के लिये मन की पवित्रता अनिवार्य है।

विशेष

1. प्रस्तुत दोहे के माध्यम से कवि ने मनुष्य को निष्कपट भाव रहने की प्रेरणा दी है।
2. दोहे में अनुप्रास और सांगरुपक अलंकार का प्रयोग है।
3. कवि ने कहा है "भोलो भाव मिले रघुराई।"

(19)

मंगल बिन्दु सुरंगु, मुखु, ससि केसरि आड़ गुरु।
इक नारी लहि संगु, रसमय किय लोचन जगत।।

शब्दार्थ – मंगल = कल्याणकारी या मंगलमय, नक्षत्र, सुरंगु = लाल, आड़ = आडा तिलक, गुरु = वृहस्पति, नारी = स्त्री राशि, रसमय = प्रेममय।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रसंग – प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के बिहारी नामक पाठ से अवतरित है जिसमें कवि ने श्रृंगार विलास का सुन्दर वर्णन किया है। प्रस्तुत सोरठा में बताया है कि एक नायक ने एक नायिका को सुन्दर आभूषणों से सुसज्जित देख लिया है और उसके मन में उसके प्रति प्रेम जाग्रत हो जाता है और वह उसकी सखी से उसकी चमत्कारिक रूप शोभा का वर्णन करता है।

व्याख्या – कवि बिहारी कहते हैं कि एक अत्यन्त सुन्दर नायिका ने अपने उन्नत मस्तक पर सुन्दर लाल बिन्दी रूपी मंगल, मुख रूपी चन्द्रमा और केशर का पीला आडा तिलक रूपी वृहस्पति को एक साथ धारण कर रखा है अर्थात् मंगल, चन्द्र और वृहस्पति इन तीनों नक्षत्रों को एक ही नारी ने ग्रहण कर रखा है। ऐसा माना जाता है कि जब ये तीनों नक्षत्र कन्या राशि में प्रवेश कर जाते हैं तो आनन्दमय वातावरण बन जाता है अतः उस नारी को देखकर एक नायक उसकी सखी से कहता है कि तुम्हारी सखी को देखकर मेरी आँखों का संसार आनन्दमय हो गया है अर्थात् चाँद जैसे मुखड़े पे मंगल जैसी लाल बिन्दिया और पीला वृहस्पति जैसा आड़ा तिलक देखकर मेरी आँखें प्रेममय हो गई हैं।

विशेष

1. प्रस्तुत सोरठा में कवि ने नायिका के सौन्दर्य को ग्रहों की सुन्दरता से आरोपित किया हैं
2. नायिका के मुख सौन्दर्य में मंगल (लाल) वृहस्पति (पीला) चन्द्रमा (गोरापन) समाहित किया है।
3. ज्योतिष विज्ञान की दृष्टि से जब मंगल, गुरु और चन्द्र एक साथ कन्या राशि में प्रवेश कर जाते हैं तो पृथ्वी पर जलवर्षण होता है। नायिका रूपी कन्या राशि में मंगल, गुरु व चन्द्र नक्षत्र को समाहित देखकर नायक की आँखों रूपी संसार में प्रेम रूपी जल की वर्षा होने लगी है।
4. प्रस्तुत सोरठा में अनुप्रास, रुपक और श्लेष अलंकार है।
5. ज्योतिष एवं ग्रह विषयक ज्ञान का बोध होता है।

3.2 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

3.2.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 कवि बिहारी रीतिकाल में किस विशेषता के लिये प्रसिद्ध है?
उत्तर – कवि बिहारी रीतिकाल में भाषा की सामासिकता और कल्पना की समाहारिता के लिये प्रसिद्ध है।

प्रश्न 2 कवि बिहारी रीतिकाल में किस कोटि के कवि थे?
उत्तर – कवि बिहारी रीतिकालीन रीतिसिद्ध कवि थे।

प्रश्न 3 कवि बिहारी के जन्म के संदर्भ में तथ्य स्पष्ट कीजिये।
उत्तर – बिहारी का जन्म वि.सं. 1620 में ग्वालियर के निकट वसुका गोविन्दपुर में हुआ था।

प्रश्न 4 बिहारी के अनुसार उनके गुरु का क्या नाम था?
उत्तर – बिहारी ने अपने गुरु का नाम नरहरिदास बताया है।

प्रश्न 5 बिहारी द्वारा विरचित 'सतसई' में प्रमुख रूप से कौन–सी भाषा प्रयुक्त की गई है?
उत्तर – 'सतसई' में कवि ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

प्रश्न 6 सर्वप्रथम कवि बिहारी किस राजा के आश्रय में रहे?
उत्तर – कवि बिहारी सर्वप्रथम मुगल बादशाह शाहजहाँ के आश्रय में रहें।

प्रश्न 7 बिहारी द्वारा 'सतसई' के दोहों को किस उपमा से उपमित किया गया है?
उत्तर – 'सतसई' के दोहों को 'नाविक के तीर' कहकर उपमित किया गया है।

प्रश्न 8 बिहारी 'सतसई' को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किस नाम से सम्बोधित किया है?
उत्तर – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'सतसई' मुक्तक काव्य को 'चुना हुआ गुलदस्ता' कहकर सम्बोधित किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न 9 कवि बिहारी के दोहों की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?
उत्तर – बिहारी के दोहों में कल्पना की समाहार–शैली और भाषा की समास–शैली परिलक्षित होती है।

प्रश्न 10 बिहारी 'सतसई' पर किस ग्रन्थ का सर्वाधिक प्रभाव है?
उत्तर – बिहारी 'सतसई' पर 'गाथा सप्तशति' का प्रभाव है।

प्रश्न 11 बिहारी ने अपनी रचना में सर्वाधिक किस ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया है?
उत्तर – नारी–सौन्दर्य के चित्रण में बिहारी ने अपनी रचनाएँ सृजित की हैं।

प्रश्न 12 'तौ लगि या मन सदन में हरि आवै केहि बाट' बिहारी ने भगवान की भक्ति के लिये क्या आवश्यक बताया है?
उत्तर – कवि ने ईश्वर प्राप्ति के लिये मन की पवित्रता व कपट रहित आचरण की आवश्यकता पर बल दिया है।

प्रश्न 13 बिहारी ने मानव मात्र को अपने व्यक्तित्व की कान्ति व मान सम्मान को बनाए रखने के लिये क्या विचार प्रस्तुत किये हैं?
उत्तर – कवि ने बताया है कि स्नेह भाव से निर्मल मन पर अहंकार और राजसी प्रवृत्ति को स्पर्श न करने दें तभी हम अपने व्यक्तित्व की चमक और मान–सम्मान को कायम रख सकते हैं।

प्रश्न 14 बिहारी ने अपने काव्य में कौन–सी त्रिवेणी का संगम किया है?
उत्तर – कवि ने अपनी मुक्तक काव्य रचना 'सतसई' में रीति, भक्ति और श्रृंगार की त्रिवेणी का संगम किया है।

प्रश्न 15 कवि बिहारी ने किस सम्प्रदाय से दीक्षा ली थी?
उत्तर – कवि बिहारी ने वैष्णव मतानुयायी निम्बार्क सम्प्रदाय से दीक्षा ली थी।

प्रश्न 16 'मनु सरित सेखर की अकस किय सेखर सत चन्द' प्रस्तुत पंक्ति में कवि का क्या आशय है?
उत्तर – कवि बिहारी ने श्रीकृष्ण के माथे पर बिराजमान मोर पंखों के मुकुट की सुन्दरता का वर्णन किया है।

प्रश्न 17 'अरे हंस या नगर में जइयो आपु बिचारि' प्रस्तुत पंक्ति में हंस के माध्यम से किसे सम्बोधित किया गया है?
उत्तर – प्रस्तुत पंक्ति में अन्योक्ति के माध्यम से सभ्य, सुशिक्षित एवं गुणवान व्यक्ति को हंस कहा गया है।

प्रश्न 18 'पाहन नाव चढाइ जिहि कीन्हे पार पयोधि' प्रस्तुत चरण में कवि ने किस घटना की ओर संकेत दिया है?
उत्तर – इस कथन में कविवर बिहारी ने स्पष्ट किया है कि जब श्रीराम लंका गये थे तो उन्होंने नल व नील की सहायता से सेतुबन्ध द्वारा वहाँ पहुँचे थे अर्थात् राम कृपा से पत्थर भी पानी में तैरने लगे थे।

प्रश्न 19 'कैसे छोटे नरनु तें, सरतु बड्नु के काम' प्रस्तुत चरण में कवि क्या व्यंजित करना चाहता है?
उत्तर – कवि ने व्यंजित किया है कि महान् कार्य करने के लिये महान गुणवान लोगों की आवश्यकता होती है उसे जन–साधारण या छोटा व्यक्ति सम्पन्न नहीं कर सकता है।

प्रश्न 20 'दस दिनु आदर पाइ कै, करि लै आपु बखान' मे निहित अन्योक्ति का क्या आशय है?
उत्तर – कवि ने स्पष्ट किया है कि दुर्जन व्यक्ति को अल्पकाल तक ही समाज में सम्मान मिलता है और जो मूर्ख लोग होते हैं वे थोड़ा सा सम्मान पाकर स्वयं की प्रशंसा स्वयं ही करते रहते हैं।

प्रश्न 21 'मेरो हरो कलेस सब, केसव केसवराई' पंक्ति में 'केसव' और 'केसवराई' शब्द किसके लिये प्रयुक्त हुआ है?
उत्तर – प्रस्तुत दोहे में श्रीकृष्ण के लिये 'केसव' और कवि बिहारी के पिता केशवराय के लिये 'केसवराई' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

प्रश्न 22 'समै पलटि पलटै प्रकृति, को न तजै निज चाल' पंक्ति में निहित भाव को व्यक्त कीजिये।
उत्तर – कविवर बिहारी ने स्पष्ट किया है कि समय परिवर्तनशील है और समय के परिवर्तन के साथ–साथ संसार के प्रत्येक पदार्थ में परिवर्तन अवश्यंभावी है।

प्रश्न 23 'कोक–सोक हेमन्त' कवि के अनुसार हेमन्त ऋतु में चक्रवाक का शोक क्यों बढ़ जाता है?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उत्तर – कवि के अनुसार हेमन्त ऋतु में राते लम्बी होती हैं ऐसी स्थिति में चक्रवाक को अधिक समय तक विरह दुःख भोगना पड़ता है क्योंकि वह रात्री के अंधेरे में अपनी प्रेयसी के पास नहीं रहता है।

प्रश्न 24 'बसें बुराई जासु तन ताहि को सम्मान' पंक्ति में कवि का आशय स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – कवि के अनुसार मनुष्य को कुटिल आचरण कभी भी नहीं करना चाहिये क्योंकि अवगुणों का सम्मान चिरकालीन नहीं होता है।

प्रश्न 25 'सो ताकौ सागर जहाँ जाकी प्यास बुझाइ' कवि की क्या व्यंजना हुई है?

उत्तर – जिस वस्तु अथवा साधन से मनुष्य के प्रयोजन सिद्ध हो जाये और संतुष्टि हो जाये, वही वस्तु या साधन महान व प्रिय लगती है, चाहे वह साधन या वस्तु अत्यन्त सामान्य अथवा तुच्छ ही क्यों न हो।

प्रश्न 26 'मरतु प्यास पिंजरा परयो, सुवा समय के फेरि' प्रस्तुत चरण में 'सुवा' शब्द का प्रतीकार्थ क्या है?

उत्तर – ऐसा ज्ञानवान गुणी व्यक्ति जो हमारे अत्यन्त निकट है किन्तु हम अज्ञानवश या समय विशेष पर तिरस्कृत करते हैं और कुटिल या अज्ञान व्यक्ति का आदर करते हैं।

प्रश्न 27 कविवर बिहारी ने 'मंगल बिन्दु सुरंग मुख केसरि आड गुरु' दोहा चरण में किस अलंकार का प्रयोग किया है?

उत्तर – प्रस्तुत दोहा–चरण में कवि बिहारी ने प्रस्तुत–अप्रस्तुत का अभेद वर्णन करते हुए रूपक अलंकार का प्रयोग किया है।

प्रश्न 28 कवि बिहारी ने 'सतसई' के प्रारम्भ में किसकी वन्दना की है?

उत्तर – कवि ने मंगलाचरण में अपनी आराध्य राधा रानी की आराधना की है।

प्रश्न 29 'नीकि दई अनाकनि, फीकी परी गुहारि' में कवि ने किस भाव से प्रभु से प्रार्थना की है?

उत्तर – प्रस्तुत दोहे में कवि ने मुँह लगे सेवक के भाव से प्रभु से प्रार्थना की है।

प्रश्न 30 'तंत्रीनाद, कवित्त रस सरस राग रति रंग' में कवि का क्या आशय है?

उत्तर – संगीत लहरी, काव्य रस और नारि संयोग जीवन का महत्त्वपूर्ण आनन्द है जिसके बिना जीवन का उद्धार नहीं है।

3.2.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 कवि बिहारी की बहुज्ञता पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

अथवा

'कवि बिहारी ने जहाँ अल्प शब्दों में विस्तृत भावों की व्यंजना की है वहीं अपनी बहुज्ञता भी व्यक्त की है।' इस कथन की पुष्टि कीजिये।

उत्तर – रीतिकालीन कवियों में बिहारी का स्थान अग्रगण्य हैं। इनकी रचनाएँ 'गागर में सागर' समाहित करने वाली रचनाएँ हैं जिनका एक–एक दोहा जो यद्यपि मात्र चार चरणों में निर्मित हैं किन्तु उसमें निहित भावों की गहराई और मारक क्षमता अन्य कवियों के पाँच–पाँच पदों के बराबर है। कवि बिहारी ने अल्प शब्दों में जहाँ विस्तृत भावों की व्यंजना की है वहीं अपनी बहुज्ञता भी प्रकट की हैं। बिहारी 'सतसई' में अनेक शास्त्रों एवं विषयों की सहज व्यंजना हुई है यथा– गणितशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, आखेट, मनोविज्ञान, पुराण, खगोल विज्ञान आदि को लेकर सुन्दर प्रभवक अवना अपनी रचनाओं में किया है। इससे नूतन उपमा और शैली का आगमन हुआ है।

कहत सबै बैंदी दिये, आँकु दस गुनों होतु।
तिय लिलाट बैंदी दिये, अगनित बढत उदोतु।।

प्रस्तुत दोहे में कवि ने शून्य के प्रयोग से दस गुने मान का सुन्दर उल्लेखकर अपने गणितज्ञ होने का प्रमाण दिया है।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Lucknow

'मंगल बिन्दु सुरंग मुखु, ससि केसरि आड गुरु।
इक नारी लहि संगु, रसमय किये लोचन जगतु।।'

प्रस्तुत दोहे में कवि ने ज्योतिष शास्त्रानुसार स्पष्ट किया है कि जब कन्या राशि में मंगल, चन्द्र और गुरु तीनों का एक साथ प्रवेश हो जाता है तो अत्यधिक रस वर्षा होती है।

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तनु की झाई परै, स्याम हरित दुत होय।।

इस दोहे में रंगों के मिश्रण का ज्ञान तथा अन्यत्र वैद्यक शास्त्र का ज्ञान स्पष्ट किया है। अतः कवि बिहारी बहुतज्ञ थे।

प्रश्न 2 बिहारी 'सतसई' में शृंगार–विलास के चित्रण में अनुभूतिमय प्रकाश डाला है।' स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – कविवर बिहारी रीतिकालीन कवियों में रससिद्ध कवि माने जाते हैं। निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षा प्राप्त करने के कारण इन्होंने राधा–कृष्ण के सिंगार विलास का अत्यन्त सुन्दर एवं मनमोहक चित्रण प्रस्तुत किया है। नायिकाओं की विविध शृंगारिक चेष्टाओं का अनुभूतिमय वर्णन किया है। 'बिहारी सतसई' में शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का भावपूर्ण समावेश किया गया है। कवि की इसी विशेषता के कारण विद्वत्समाज में यह दोहा प्रचलित है –

'जो कोई रस रीति को, समुझा चाहे सार।
पढे बिहारी सतसई, कविता को शृंगार।।'

कवि ने संयोग शृंगार के अन्तर्गत नायक–नायिका के मिलन, रति, हास्य–विनोद, हाव भाव विलास और शृंगारिक चेष्टाओं का वर्णन किया है और नायिकाओं के अनेक मनोरम बिम्ब प्रस्तुत किये हैं –

'बत रस लालच लाल की, मुरलि धरी लुकाई।
सौंह करें, भौंहनि हँसे, दैन कहै नट जाई।।'

विप्रलम्भ शृंगार के चित्रण में बिहारी ने पूर्वराग से लेकर विरह विदग्धा एवं कामपीड़िता नायिका की कृशता, उत्सुकता और उपालम्भ आदि का सुन्दर चित्रण किया है।

शृंगार की इन कृतियों में कहीं–कहीं पर कवि ने अतिशयोक्ति का प्रयोग किया है जिसमें विरहिणी नायिकाओं की अनेक भाव–प्रवण चेष्टाओं को चित्रित करने में कवि ने अपनी रससिद्धता का प्रमाण प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 3 कवि बिहारी के नीति–वर्णन पर संक्षिप्त प्रकाश डालिये।

उत्तर – कविवर बिहारी ने 'सतसई' में शृंगार रस के उभयपक्षीय चित्रण के साथ–साथ नीति का भी परिचय दिया है इससे यह तथ्य स्पष्ट होता है कि कवि बिहारी को लोक–व्यवहार का भी अच्छा खासा अनुभव था। वैसे कवि ने अपने जीवन में अलग–अलग स्थानों जैसे आगरा, मथुरा, जयपुर आदि में रहकर अच्छा अनुभव प्राप्त कर लिया था। इसी कारण उन्होंने मानव–व्यवहार को लेकर अत्यन्त सुन्दर नीति–विषयक दोहे लिखे और सज्जनों की प्रशंसा व दुर्जनों की निन्दा की है

'बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमान।
भलो भलौ कहि छोड़िये, खोटे ग्रह जप दान।।

प्रस्तुत दोहे में कवि ने दुर्जनों को सम्मान प्राप्त करते देखकर समय की परिवर्तनशीलता को स्पष्ट किया है।

'मरतु प्यास पिंजरा परयो, सुवा समय के फेर।
आदर दै दे बोलियत, बायस बलि की बेर।।'

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

समय विशेष पर अथवा अज्ञानवश हम गुणवान व्यक्ति की उपेक्षा करते हैं और अज्ञान या दुष्टों को सम्मान देते हैं।

'नर की अरु नलनीर की, गति एकै करि जोई।
जेतो नीचों व्है चले, तेतौ ऊँचो होई।।'

उपरोक्त दोहे में विनम्रता के आचरण पर प्रकाश डाला है।

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
उहि खाये बौराय जग, इति पाये बौराय।।

बिहारी को राज–दरबारों का अच्छा अनुभव था और धन–वैभव की चमक–दमक से वे अच्छी तरह परिचित थे। प्रस्तुत दोहे में कवि ने धन के नशे का प्रभावशाली वर्णन किया है।

को छुट्यो एहि जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यों–ज्यों सुरझ भज्यों चहति, त्यों–त्यों उरझत जात।।

मनुष्य जैसे–जैसे सांसारिक विषय–भोग से मुक्त होना चाहता है वह उसमें उतना ही फँसता जाता है।

आदि अनेक नीतियुक्त दोहे कवि ने तैयार किये जिनमें अन्योक्ति का प्रयोग कर नीति सम्मत तथ्यों का उद्घाटन किया। इस दृष्टि से बिहारी का काव्य प्रशंस्य है।

प्रश्न 4 'बिहारी सतसई' की विशेषताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

उत्तर – रीतिकालीन काव्यधारा के रससिद्ध कवियों में कवि बिहारी का अन्यतम स्थान है। बिहारी द्वारा विरचित 'सतसई' रीतिकाल का सबसे लोकप्रिय ग्रन्थ हैं। इसमें दोहों के माध्यम से भाव–गाम्भीर्य की सशक्त व्यंजना हुई है। इसलिये कहा जाता है कि **'सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर, देखन में छोटे लगे घाव करे गम्भीर।'** 'बिहारी सतसई' श्रेष्ठ मुक्तक काव्य है तथा इसमें शृंगार रस का विशेष परिपाक हुआ है। इस काव्य में भक्ति, नीति व शृंगार का संगम है जिसमें अन्योक्तियों का पर्याप्त प्रयोग किया गया है। 'बिहारी सतसई' में कल्पना की समाहार–शक्ति, भाषा की सामासिकता बिम्बात्मकता, कोमल भाव गाम्भीर्य, भाषा की कलात्मकता एवं व्यंग्य–वैभव का अनूठा प्रयोग किया गया है। रसोद्रेक की दृष्टि से बिहारी का एक–एक दोहा आकर्षक है साथ ही इसमें विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के साथ सात्विक भावों की सहज व्यंजना हुई है। कवि ने अलंकारों का भावानुकूल प्रयोग किया है। विभिन्न नायिकाओं के विलास–चित्रण में कवि सिद्धहस्त रहे हैं। उन्होंने एक–एक शब्द का सोच समझकर प्रयोग किया है और स्वानुभूतियों की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। एक विशेष बात यह है कि इनकी रचना 'गागर में सागर' समाहित करने वाली रही है। अतः हम यह कह सकते हैं कि 'बिहारी सतसई' मुक्तक काव्य की सभी विशेषताओं से मण्डित रचना है।

प्रश्न 5 हिन्दी साहित्य की 'सतसई काव्य परम्परा' में बिहारी सतसई का महत्त्व स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – हिन्दी साहित्य की 'सतसई काव्य परम्परा' में बिहारी सतसई का सर्वोत्कर्ष स्थान रहा है। इसके अक्षय प्रकाश में अन्य सभी सतसई काव्य उसी प्रकार निष्प्राण हो जाते हैं जिस प्रकार पूर्णिमा के सुधाकर की ज्योत्सना से असंख्य नक्षत्र कान्तिहीन हो जाते हैं। बिहारी सतसई पर 'गाथासप्तशती', 'आर्यासप्तशती' और 'अमरुकशतक' का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। बिहारी की 'सतसई' शृंगार–रस–प्रधान है। यह एक श्रेष्ठ मुक्तक काव्य है तथा लक्ष्य एवं लक्षण–काव्य की परम्पराओं से सर्वथा मुक्त रहा है। फिर भी इसमें शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का मार्मिक विवेचन, अनुभावों की रमणीय विवृति, प्रेम एवं विरह की दशाएँ, हाव–भावों एवं संचारियों का प्रयोग, प्रकृति का मनोहारी चित्रण, कविता एवं दर्शन का सम्पूर्ण सजीव विवरण प्राप्त होता है। इसमें भाव गाम्भीर्य एवं रस ..... स्वरूप को देखकर विभिन्न सूक्तियाँ प्रचलित हैं –

"सतसईया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करे गम्भीर।।"

Jan Kshya Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

"जो कोइ रस–रीति को, समुझा चाहे सार।
पढै बिहारी सतसई, कविता को शृंगार।।"
"दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हियै, दई नई यह रीति।।"

हिन्दी साहित्य में 'बिहारी सतसई' अनुपम रचन ग्रन्थ हैं। वैसे सतसई काव्य परम्परा ईसा के बारहवीं शताब्दी 'गाथा सप्तशती' से लेकर आज तक विकसित हो रही है। आधुनिक युग में 'उद्धव शतक', 'वीर सतसई' तथा 'हरिऔध सतसई' भी पूर्वागत परम्परा की प्रतीक हैं।किन्तु हिन्दू साहित्य परम्परा के इतिहास 'बिहारी सतसई' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस साहित्य में भावपक्ष व कलापक्ष का कलात्मक स्वरूप उभरकर सामने आया है। शृंगार के साथ वैराग्य, भक्ति, नीति और विनय के मार्मिक दोहे भावों की तीव्रता और गहनता के साथ दिखाई देते हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। यही कारण है कि हिन्दी के मध्यकालीन साहित्य में प्रसिद्धि, उत्कृष्टता एवं सर्वाधिक लोकप्रियता की दृष्टि से 'रामचरितमानस' के बाद 'बिहारी सतसई' की ही गणना की जाती है।

3.2.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 'बिहारी ने सतसई में गागर में सागर भरा है।' प्रस्तुत कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

अथवा

बिहारी की लोकप्रियता के कारण स्पष्ट कीजिये।

अथवा

भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से 'बिहारी सतसई' का विवेचन कीजिये।

अथवा

'बिहारी के दोहे गागर में सागर भरने के अप्रतिम उदाहरण हैं।' प्रस्तुत कथन के आधार पर उनकी बहुज्ञता को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के बाद यदि किसी ग्रन्थ को लोकप्रियता प्राप्त हुई है तो वह बिहारीकृत 'सतसई' है –

ब्रज–भाषा बरनी कविन, बहुविधि बुद्धि विकास।
सबकी भूषण 'सतसई', करी बिहारी दास।।
जो कोऊ रस रीति को, समुझौ चाहे सार।
पढै बिहारी सतसई, कविता को सिंगार।।

रीतिकालीन काव्यधारा के कवियों में बिहारी का नाम पूर्ण सम्मान के साथ लिया जाता है। वे बहुश्रुत, प्रभावशाली और लोकानुभव से परिपूर्ण एवं रससिद्ध कवि थे। यद्यपि बिहारीकृत सतसई का प्रमुख रस शृंगार है किन्तु उसमें नीति, भक्ति, वैराग्य एवं सामाजिक व्यवहार विषयक अन्योक्तियों दोहों के रूप में समावेश हुआ है। उनकी रचना का एक–एक दोहा कलात्मकता एवं व्यापकता का अनूठा उदाहरण है और उनमें अनेक भावों को समाहित करने की क्षमता है यही विशेषता ऐसी है जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि बिहारी की रचनाओं में गागर में सागर समाहित है तथा इसकी बहु पक्षीय मारक क्षमता प्रशंस्य है –

सतसैया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करै गम्भीर।।

इस कथन के आलोक में यदि देखा जाये तो बिहारी के दोहों में व्यंजना की मात्रा व शक्ति इतनी सघन है कि क्षणभर में पाठक की सम्पूर्ण चेतना को एक चमत्कारिक सौन्दर्य–बोध की अनुभूति से मुक्त कर देता है। यही कारण इनकी प्रसिद्धि का मूल है। विशेष बात तो यह है कि सतसई में मात्र सात सौ तेरह दोहे हैं। और इसके अतिरिक्त उनकी और कोई रचना नहीं है फिर भी इतनी व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। यद्यपि रीतिकाल में शृंगारी कवियों की कोई कमी नहीं थी। किन्तु नारी सौन्दर्य के जितने चतुर–चितेरे कवि बिहारी थे और जितना सूक्ष्म व संवेदनात्मक ज्ञान उनमें था वैसा किसी अन्य कवि में नहीं देखा गया। उन्होंने नारी के नेत्रों का इतने रूपों में

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

वर्णन किया है कि आश्चर्य होता है जैसे 'ऐ छबि छाके नैन, आँखिन सौ लपटाति, ए कजरारे, कौन पर करत कजाकी नैन, खंजन गंजन नैन, अहेरी नैन, नेह नचैहों नैन, लोचन लालची, रंगनिचुरत से नैन, से नैना निझावर, इन्दीवरनयनी आदि विभिन्न अलंकृत अभिव्यक्तियों के समग्र नारी सौन्दर्य नेत्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। वस्तुतः, नारी सौन्दर्य में नेत्रों का विशेष महत्त्व रहा है। नारी हृदय में जहाँ काम–वासना की उद्दाम लालसा छुपी हुई रहती है। वहाँ उनका नारी सुलभ संकोच और लज्जा प्रियतम से मिलने से रोकती है और इस द्वन्द्वपूर्ण स्थिति की अभिव्यक्ति नारी के प्यासे नेत्रों से ही होती है। इस प्रकार बिहारी ने नारी के सौन्दर्य का सशक्त चित्रण किया है। इस प्रकार के चित्रण में बिहारी ने कोमलकान्त पदावली का प्रयोग किया है और लालित्य व गाम्भीर्य का सुन्दर समायोजन किया है।

बिहारी का काव्यगत सौंदर्य

भाव पक्ष और कला पक्ष काव्य के दो रूप माने गये हैं। जिसके भावपक्ष में कवि का सूक्ष्म अवलोकन एवं उसकी संवेदना समायोजित रहती है। जबकि कला पक्ष में उसकी अभिव्यक्ति की कुशलता रहती है। इन दोनों ही पक्षों में काव्य में असामान्य निर्वाह हुआ है, इसलिये उनके छोटे दोहों में कल्पना की समाहार शक्ति, भाषा की समास शक्ति और कलात्मक कुशलता का सुन्दर समावेश मिलता है इसीलिये काव्य सौन्दर्य से मण्डित है।

भाव पक्षीय विशेषताएँ

कवि बिहारी ने कल्पना की समाहार शक्ति के बल पर अपने दोहों में जिस भाव गाम्भीर्य की अभिव्यक्ति की है वैसी अन्य कवियों के बड़े–बड़े पदों में भी नहीं मिलती है और यही वजह उनकी गागर में सागर भरने वाली कहावत पर चरितार्थ होती है। काफी लम्बी चौड़ी बात को संक्षेप में प्रभावकारी ढंग से व्यक्त कर देना उनकी महती विशेषता है।

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास एहि काल।
अली कली ही सों बन्ध्यों, आगे कौन हवाल।।

इसी प्रकार उनके भावों की गंभीरता को व्यक्त करने के लिये अन्य कई दोहे हैं जो इस दृष्टिकोण को प्रकट करते हैं –

फूली काली फूल–सी, फिरतु जु विमल विकास।
भोर तरैया होहुँते, चलत तोहि प्रिय पास।।

बिहारी के इन छोटे–छोटे दोहों में भावाभिव्यक्ति के लिये इतनी कल्पना की समाहार शक्ति और भाषा की समास शक्ति समाहित है कि खुद–ब–खुद बिहारी के गाम्भीर्य चिन्तन का साक्षात्कार कराने में पूर्णतः सफल है।

डिगत पानि डिगुलात गिरि, लखि सब ब्रज बेहाल।
कंपि किसोरी दरस कै, खरे लजाने लाल।।

प्रस्तुत दोहे में राधा–कृष्ण की रागात्मक स्थिति लो स्पष्ट किया और दूसरे दोहे में कृष्ण के द्वारा ब्रज की रक्षा करने के लिये गोवर्धन पर्वत उठाने की घटना वर्णित है किन्तु राधा की ओर देखने से उनके हृदय में प्रेम उद्रेक होने लगा और सात्विक भाव से रोमांस के कारण उनका हाथ डगमगाने लगा, जिससे ब्रजवासी घबराने लगे और सोचने लगे कि कहीं गिर्राज पर्वत भगवान कृष्ण के हाथों से गिर न जाये। ब्रजवासियों की इस स्थिति को देखकर कृष्ण भी लज्जित होने लगे। अब देखिये कि इतना लम्बा प्रसंग कवि बिहारी ने केवल एक ही दोहे के मात्र चार चरणों में समाहित कर दिया है।

प्रबन्ध काव्य के विस्तृत आकार में ऐसे भी स्थल आ जाते हैं, जहां अनुभावों और चेष्टाओं के बिना भी काम चल जाता है किन्तु जब एक ही दोहे में भाव की अभिव्यंजना करनी हो और विभाव पक्ष का निरूपण भी करना हो तो बिना अनुभाव तथा संचारी भाव की योजना के रस परिपाक नहीं हो सकता है। बिहारी ने अपनी कल्पना शक्ति का परिचय देते हुए बिना भावों के अनुभावों के द्वारा ही रसोद्रेक करने का प्रयास किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सटपटाति–सी ससिमुखी, मुख घूंघटि–पट ढाँकि।
पावक–झर–सी झमकि कै, गई झरोका झाँकि।।

कवि ने अनुभावों और हाव–भाव का सुन्दर चित्रण किया है जिसमें उन्होंने अपनी स्वतंत्र चेतना को काम में लिया है। वैसे भावों का स्थान काव्य शास्त्रानुसार नायिका में ही माना जाता है किन्तु उन्होंने अपनी काव्य कुशलता से एक ही स्थान पर नायक एवं नायिका के भावों को स्पष्ट किया है।

कहत, नटत रीझत, खिजत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत है, नैननि ही सों बात।।

बिहारी के गुणों में इतना तो कहना ही होगा और इसे सबको मानना ही होगा कि ये अर्थ के धनी, भावों के कुशल चित्रकार सुसंगठित एवं समाहार शैली के प्रयोक्ता तथा काव्यांगों के ज्ञाता कवि थे, उनमें भावों की तीव्रता, प्रखरता एवं गहनता रही है।

पल प्रगटि बरुननि बरी, नहीं कपोल ठहरात।
अँसुवा परि छतिया छनकु, छिन चिनाई छपि जात।।

प्रस्तुत दोहे में विरहिणी नायिका के व्यथित रूप का चित्रण किया गया है। वह अपने प्रियतम के विरह में अश्रु बहाती है इसमें व्यंजना लालित्य एवं अनुप्रास एक सथ दृष्टव्य हैं।

दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर–चित प्रीति।
परति गाँठ दुरजन हिये, दई–नई यह रीति।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बिहारी का भाव पक्ष सशक्त है। कल्पना की समाहार शक्ति, माधुर्य एवं भावात्मक तीव्रता का बिहारी के मुक्तक काव्य में अत्यन्त सुन्दर समावेश किया हुआ है।

कला पक्षीय विशेषताएँ

किसी भी काव्य में उसके कला पक्ष के अन्तर्गत भाषा, छन्द, अलंकार, रीतिबद्धता एवं भाषा की समास शक्ति पर ध्यान दिया जाता है, इस दृष्टि से कवि बिहारी भाषा के सफल प्रयोगकर्त्ता हैं। उनकी भाषा में प्रत्येक शब्द का अपना महत्त्व है। बिहारी ने भावों के अनुरूप शब्दों का चयन किया है। भाषा की सरसता, समरसता, समाहार की पूर्णता उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। सामाजिक शब्दावली के कारण उनकी भाषा क्लिष्ट भी है किन्तु उसमें भाव सम्प्रेषण की क्षमता है।

'मंगल बिन्दु सुरंग मुख, ससि केसर आड गुरु।
इक नारी लहै संगु, रसमय किय लोचन जगतु।।'

प्रस्तुत उदाहरण में कवि ने सुन्दर नायिका के मुख मण्डल की कान्ति को चन्द्रमा, लाल बिन्दी को मंगल और केशर की आड़ी रेखा में लगे चन्दन को बृहस्पति बताया है और ज्योतिष विज्ञान की स्थितिनुसार स्पष्ट किया है कि जब मंगल–चन्द्र और बृहस्पति तीनों ग्रह कन्या राशि में एक साथ प्रवेश कर जाते हैं तो अतिवृष्टि होती है – नायिका का मुख सौन्दर्य देखकर नायक के चक्षु–संसार में प्रेम की अच्छी वर्षा होने लगी। इस सम्पूर्ण दोहे में सांगरुपकता का सुन्दर समायोजन किया है, इसी प्रकार –

तो लगि या मन सदन में हरि आवे किहि बाट।
विकट जटै जौ लगु निपट, खुले न कपट कपाट।।

प्रस्तुत दोहे में कवि ने भगवद्–भक्ति के लिये मन–सदन को पवित्र रखने की प्रेरणा प्रदान की है।

कवि बिहारी ने सुन्दर उत्प्रेक्षाएँ अपनी सरस रचनाओं में समाहित की हैं और उनके माध्यम से श्रृंगारिक भावों का सुन्दर परिचय दिया है –

सोहत ओढे पीत पटु, स्याम सलौने गात।
मनौ नीलमणि सैल पर, आतप परयो प्रभात।।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रस्तुत दोहे में बिहारी ने भगवान् कृष्ण के रूप–सौन्दर्य को उत्प्रेक्षा में बाँधा गया है। चित्रोपमा एवं अलंकारिक रूप विधान बिहारी की भाषा की विशेषता है जिसमें मर्मस्पर्शी भावों की समाष्टि है।

कहलाने एकहि बसत अहि मयूर मृग बाघ।
जगतु तपोवन सो कियो, दीरघ, दाघ निदाघ।।

प्रकृति एवं अचेतन जगत के साथ मानवीय भावों की सृष्टि करने में बिहारी ने अपनी सरलतम शैली का परिचय दिया है।

कवि ने समास शक्ति के बल पर नायक–नायिका की विभिन्न चेष्टाओं एवं क्रिया–कलापों का सफल व सुन्दर चित्रण किया है। छोटे–छोटे दोहों में इस प्रकार का चित्रण अत्यन्त प्रभावशाली है–

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै, भौहनि हंसे, देन कहै नट जाय।।

वस्तुतः, बिहारी का मुक्तक काव्य इतनी सरस और मधुर, भावपूर्ण एवं ललित कृति है कि इससे सद्यः रसास्वाद हो जाता है। आज तक बिहारी के काव्य सागर से भाव रत्नों को ग्रहण करने का प्रयास किया गया है किन्तु उनका कोष तो सदैव अक्षुण्ण है यहाँ तक कि आलोचकों की आलोचना भी सही ढंग से बिहारी के दोहों को आज तक नहीं छू पाई। इस स्थिति का परिचय कवि बिहारी ने अनुमान के आधार पर स्वयं दिया है–

लिखन बैठि जाकी छवि, गहि–गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।।

बिहारी की बहुज्ञता

कवि बिहारी ने अल्प शब्दों में जहाँ विस्तृत भावों की व्यंजना की है वहीं उन्होंने अपनी बहुज्ञता भी प्रकट की है। कवि बिहारी के दोहों में गणितशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, वैद्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र, राजनीति विज्ञान, आखेट, पौराणिकता एवं मनोविज्ञान आदि का सुन्दर एवं सरस चित्रण अपने दोहों में किया है।

(नोट– कृपया इसी पाठ के लघुत्तरात्मक प्रश्न संख्या 1 को देखें।)

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि बिहारी के दोहे भावपूर्ण, व्यंजनाशक्ति से परिपूर्ण, गम्भीर एवं गहनतम अर्थ के प्रतीक एवं पूर्णतया कलात्मक हैं। इनके सभी दोहों में 'गागर में सागर' समाहित हैं। साथ ही 'देखन में छोटे लगे, घाव करै गम्भीर' का कथन पूर्णतः चरितार्थ होता है। कवि की अभिव्यक्ति कौशल की लगभग सभी समीक्षकों के द्वारा भूरि–भूरि प्रशंसा की गई है –

सतसैया के दोहरे, चुनै चौहरी हीर।
भाव परे तीछन खरे, अर्थ भरे गम्भीर।।

प्रश्न 2 'बिहारी के काव्य में श्रृंगार–भक्ति–नीति की त्रिवेणी तरंगित हो रही है।' इस कथन की समीक्षा कीजिये।

अथवा

'बिहारी के काव्य में श्रृंगार नीति एवं भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है।' कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – कविवर बिहारी रीतिकालीन कवियों में सर्वोत्कृष्ट स्थान आज भी बनाये हुए हैं। आज भी साहित्य प्रेमियों के दिल व दिमाग पर कवि बिहारी की सुन्दर रचना तरंगित होती है और मुक्त कण्ठ से अपनी स्वर–लहरी बिखेरती है। उन्होंने अपनी 'सतसई' में तत्कालीन सभी साहित्यिक परम्पराओं का सुन्दर चित्रण किया है साथ ही सभी प्रकार के भावों का संयोजन कलात्मक ढंग से किया है। उनके काव्य में जहाँ एक ओर श्रृंगार रस की मंदाकिनी प्रवाहित होती है वहीं दूसरी ओर भक्ति की असंख्य तरंगों के साथ कालिन्दी की अविरल धारा का प्रवाह है और तीसरी ओर वैराग्य, नीति एवं विनय की सरस्वती सरिता की कल–कल नाद हर काव्य हृदय को विभोर किये हुए है। इन तीनों के सम्मिश्रण से 'सतसई' का काव्य स्वरूप त्रिवेणी संगम तुल्य अत्यन्त मनोरम हो गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

वस्तुतः, कवि बिहारी निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे जिसकी वजह से राधा–कृष्ण के श्रृंगारिक वर्णन के साथ उन्होंने अपनी भक्ति भावना को भी व्यक्त किया है। और उनकी मार्मिक अनुभूतियों का पुट देकर नीतिगत विषयों का स्वाभाविक रूप से समावेश किया है। इस प्रकार उनके श्रृंगार वर्णन में, खासकर वियोग वर्णन में भक्ति व नीति का पूर्ण समावेश हुआ है।

श्रृंगार वर्णन और बिहारी

श्रृंगार वर्णन की दृष्टि से कवि बिहारी का अपना स्वयं का वजूद रहा है। इन्होंने अपने काव्य में श्रृंगार रस की प्रचलित परम्परा के साथ–साथ मौलिक तत्त्वों का भी समावेश किया है और अपने पूर्ववर्ती कवि विद्यापति एवं सूरदास से सूक्ष्म चित्रण की प्रेरणा पाकर श्रृंगार के संयोग व वियोग दोनों पक्षों का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। इसी वजह से उनकी सतसई की गणना श्रृंगार रस के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों में मानी जाती है –

जो कोई रस रीति को, समुझा चाहे सार।
पढै बिहारी सतसई, कविता को श्रृंगार।।

संयोग श्रृंगार का वर्णन

बिहारी का संयोग श्रृंगार 'शास्त्रीय परम्परा' अथवा 'रीतिकालीन परम्परा' पर आधारित है। उन्होंने नायक–नायिकाओं के मिलन, रतिक्रीड़ा, हास्य–विनोद, हाव–भाव, विलास एवं श्रृंगारिक चेष्टाओं को समाहित किया है। कहीं पर नायिका के मान–गर्व का तो कहीं पर व्यंग्य भरी तीखी उक्तियों का और कहीं पर सुर–ताल भावों का चित्रण कर के कवि ने श्रृंगार संयोग में मार्मिकता का समावेश किया है।

एक स्थान पर तो प्रेमिका द्वारा प्रेमी के भेद को मिटाकर प्रेमसत्ता के चरम स्वरूप को प्रकट कर दिया है–

प्रिय के ध्यान गही गही, रही वही है नारि।
आपु–आपु ही आरसी, लखि रीझति रिझवारि।।

बिहारी की एक खास विशेषता यह भी रही है कि उन्होंने नायक–नायिका के रूप सौन्दर्य का समान भाव से वर्णन किया है। बिहारी की नायिका नायक के रूप पर मुग्ध रहती है और उसकी रूप सुधा का आस्वादन करते हुए वह आगे–पीछे का जरा–सा भी ध्यान न करते हुए निर्निमेष नायक की ओर देखती रहती है और फिर भी तृप्त नहीं होती है –

त्यों–त्यों प्यासे ही रहत, ज्यों ज्यों पियत अघाय।
सगुन सलौन रूप की, जु न चख–तृषा बुझाय।।

बिहारी ने नायिका के हाव–भावों का अत्यन्त सुन्दर चित्रण किया है –

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करें भौहनि हंसे, देन कहै नट जाय।।

इसी प्रकार नायिका के नेत्रों की चंचलता, कटाक्ष एवं भृकुटि–वक्रता का अनुपम वर्णन किया है –

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सों बात।।

नायक के सारे संकेतों का भावपूर्ण उत्तर यह नायिका अपनी आँखों के द्वारा ही दे देती है।

वियोग श्रृंगार का वर्णन

कवि बिहारी का संयोग श्रृंगार जहाँ अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है वहीं दूसरी ओर उनका वियोग वर्णन का भी अपना अलग वर्चस्व रहा है। इस संदर्भ में कवि ने ऊहात्मक प्रवृत्ति को अपनाया है एवं उसमें

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

आध्यात्मिकता का भी समावेश किया है। उन्होंने पूर्वराग की व्यथा से लेकर विरह की सभी दशाओं का चित्रण किया है। नायक के बिछड़ जाने पर नायिका रात–दिन परेशान रहती है, उसकी याद करती है और एक पल के लिये भी वे चैन से नहीं रह पाती है –

सोवत जागत सुपनवस, रस रिस चैन कुचैन।
सुरति स्यामघन की सुरति, विसरे हुँ बिसरे न।।

प्रस्तुत दोहे में कवि ने विरह विदग्धा नायिका का अत्यन्त मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

एक नायिका को अपने प्रियतम का पत्र मिला उसे पढकर वह कितनी व्याकुल हो गई उसका चित्रण कवि ने–

कर लै चूमि चढाइ सिर, उर लगाइ भुज भेट।
लहि पानी पिय की लखति, बाचति धरति समेट।।

कवि बिहारी ने विरह पीड़िता नायिका की कृशता का वर्णन करते समय कहीं–कहीं पर अतिश्योक्ति का प्रयोग किया है –

इति आबति चलि जाति उत, चली छ सातक हाथ।
चढी हिण्डोले पै रहै, लगी उसासन साथ।।

प्रस्तुत दोहे में नायिका की विरह अवस्था का वर्णन करने में अतिश्योक्ति का प्रयोग किया है, क्योंकि वह इतनी दुबली हो गई है कि श्वास–प्रश्वास के समय वह छः सात हाथ आगे पीछे झोंके खाने लगती है मानों वह किसी झूले में हिण्डोली खा रही है। इसके साथ इस दोहे में मार्मिकता भी है कि वह अपने प्रियतम के विरह में इतनी कृशकाय हो चुकी है कि श्वास की स्थिति को भी सहन नहीं कर पाती है।

मैं तो सो कैवां कह्यो तू जिन इन्हें पत्याइ।
लगा लगी किये लोइनु उर में लाई लाइ।।

एक सखी दूसरी सखी को सम्बोधित करते हुए कहती है कि मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया कि तुम इन आँखों पर भरोसा मत करो, क्योंकि ये आपस में लगा लगी करते हैं और हृदय में आग लग जाती है। कवि ने विरह की कातरता का वर्णन बहुत ही अच्छे व मार्मिक ढंग से किया है।

जाति मरी विधुरी धरी, जल सकरी की रीति।
खिन–खिन होती खरी–खरी, अरी अरी यह प्रीति।।

प्रस्तुत दोहे में कवि ने एक विरहिणी की स्थिति उस मछली के समान बताई है, जो जल से अलग कर दी गई हो।

कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेसु लजात।
कहि है सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात।।

एक नायिका जब अपने प्रियतम को खत लिखने बैठती है तो उसे लिखने के लिये शब्द नहीं मिलते हैं वह केवल यह लिखकर पत्र समाप्त कर देती है कि हे प्रिय! तुम अपने ही हृदय से पूछ लो कि मेरे हृदय की क्या स्थिति है?

इस प्रकार कवि बिहारी ने अनेक दोहों के माध्यम से संयोग व वियोग श्रृंगार के दोनों पक्षों को सजीवता प्रदान कर अपने श्रृंगारी कवि होने का परिचय दिया है।

भक्ति भावना और बिहारी

कवि बिहारी की सतसई में लगभग पचास ऐसे दोहे हैं जिनमें भक्ति का रस पगा हुआ है। इन दोहों से यह स्पष्ट होता है कि बिहारी राधा–कृष्ण के अनन्य भक्त थे। उनकी भक्ति सरल भाव की प्रकट होती है जिसके प्रमाण कवि के कई दोहे प्रस्तुत करते हैं जिनमें कवि ने अपने आराध्य को अनेक प्रकार के उपालम्भ भी दिये हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

चूंकि बिहारी निम्बार्क सम्प्रदाय से दीक्षित थे इसलिये कृष्ण की कृपा पाने के प्रयोजन से उनकी प्राणेश्वरी राधा की मधुर स्तुति की है। राधा और गोपियों का प्रेम ही उनके कृष्ण प्रेम का आदर्श रहा तथा उनके सदृश्य उनमें भी अपने इष्ट के प्रति अनन्य श्रद्धा व निष्ठा है और इसी वजह से उनके भक्ति सम्बन्धी दोहों में श्रृंगार की मधुर झलक दृष्टिगोचर होती है –

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाई परै, स्याम हरित दुति होय।।

बिहारी ने भक्ति भावना के साथ अपने उद्धार की बलवती इच्छा को अपने आराध्य व आराध्या के श्रीचरणों में प्रस्तुत की है –

हरि कीजत तुम सौं यह, विनती बार हजार।
जिहिं तिहिं भाँति डरो रहौ, परयौ रहौ दरबार।।

कवि ने अपनी भक्ति भावना को सख्य भाव से प्रभु कृष्ण के श्रीचरणों में अर्पित की है और एक मुँह लगे सेवक की भाँति अपने आप को भगवान के आगे समर्पित किया है –

करौ कुवत जग कुटिलता, तजौ न दीन दयाल।
दुखी होउगे सरल चित, बसत त्रिभंगी लाल।।
कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तु हूँ लागी जगत गुरु, जग नायक जग बाय।।
थोरे हूँ गुन रीझते, बिसराई वह बानि।
तुमहूँ कान्ह मनो भये, आज काहि के दानि।।

कवि बिहारी ने बताया कि भगवान की सच्ची भक्ति भावना के लिये मन की शुद्धता व सच्ची आस्था का होना आवश्यक है –

तौ लागि या मन सदन में, हरि आवै केहि बाट।
विकट जटे जो लगु निपट, खुले न कपट कपाट।।

भक्ति के नाम पर किया जाने वाला आडम्बर अथवा दिखावे की प्रवृत्ति का बिहारी ने विरोध किया है और मन की शुद्धि पर विशेष बल दिया है –

जप माला छापा तिलक सरै न एकौ काम।
मन काँचै नाचैं व्यथा, साँचैं राचै राम।।

बिहारी यद्यपि निम्बार्क सम्प्रदाय के दीक्षित थे किन्तु उन्होंने प्रभु राम के प्रति भी समान रूप से अपनी आस्था प्रकट की है –

बन्धु भये तुम दीन के, को तारयो रघुराई।
तूठे–तूठे फिरत हौं, झूठे विरद कहाई।।
यह बरिया नहीं और की, तू करिया वह सोधि।
पाहन नाव चढाइ जिहिं, कीन्हे पार पयोधि।।

कवि बिहारी ने सगुण एवं निर्गुण दोनों ही भक्ति धाराओं में किसी प्रकार का भेद नहीं रखा। उन्होंने निर्गुण रूप की व्यापकता के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि –

दूरि भजन प्रभु पीठ दै, गुन विस्तारन काल।
प्रकटत निर्गुण निकट रहि, चंग रंग गोपाल।।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

एक बात और भी थी कि कवि बिहारी विभिन्न मतवादों को पूर्णतः अनुचित मानते थे, उनकी आस्था एक मात्र नन्द किसोर में थी और समग्र प्रपंच को वे उसी की लीला मानते थे –

अपने अपने मत लगे, वाद मचावत सोर।
ज्यों सबहीं को देइबो, एकै नन्द किसोर।।

जिस प्रकार ज्ञानाश्रयी शाखा के अन्य कवियों ने शुद्ध मन व विवेक को महत्त्व दिया वैसे ही बिहारी ने मन की पवित्रता पर बल दिया है –

दीरघ साँस न लेहू दुःख, सुख साई नहिं भूलि।
दई दई क्यों करतु है, दई दई सु कबूलि।।

प्रस्तुत दोहे के माध्यम से कवि ने सुख–दुःख में समान रहने की प्रेरणा दी है और बताया है कि ये दोनों ही ईश्वर की देन है दोनों को समान रूप से वरदान समझकर स्वीकार करना चाहिये।

कवि बिहारी ने अपने भक्तिपरक दोहों में अनेक प्रकार के भाव प्रकट किये हैं जिनमें राधा स्तुति, राधा–कृष्ण प्रेम, गोपी–कृष्ण प्रेम, सख्य भाव के रूप में उपालम्भ, प्रेम की एक निष्ठा, विनय एवं विश्वास आदि विविध भाव व्यक्त हुए हैं। उनकी भक्ति में वैराग्य का भी पुट देखने को मिलता है, साथ ही दार्शनिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन भी है –

ज्यों ह्वै हौं त्यौं होऊँगी, हौ हरि अपनी चाल।
हठ न करौ अति कठिन है, मो तारियो गोपाल।।

बिहारी ने सांसारिक कर्मजाल और भौतिक आकर्षणों में उलझे व्यक्तियों को गाथा के प्रभाव को अन्योक्ति के माध्यम से समझाया है–

को छूट्यो एहिं जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यों ज्यों सुरझि भज्यो चहति, त्यों–त्यों अरु उरझत जात।।

अतः हम कह सकते हैं कि बिहारी 'सतसई' में शृंगार की प्रधानता होते हुए भी भक्ति भाव की सरस कालिन्दी प्रवाहित हुई है जिसमें अवगाहन करके गोप–गोपियों की तरह भक्त जन अपना उद्धार कर लेते हैं।

नीति वर्णन और बिहारी

जहाँ एक ओर शृंगार की पावन सरिता अपनी अनगिनत तरंगों से काव्य प्रेमियों के शुष्क हृदय को प्लावित करती हैं वहीं दूसरी ओर भक्ति भावना की पावन कालिन्दी भक्तों का निरन्तर मोक्ष द्वार हेतु मार्ग प्रशस्त करती है वहीं तीसरी ओर नीति की सरस्वती जीवन की पूर्णता में अपना पूरा–पूरा वरदान देती है यही तो कारण है कि बिहारी सतसई को त्रिवेणी का मनोरम संगम कहा गया है। बिहारी को लोक व्यवहार का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने मथुरा, आगरा, जयपुर में रहते हुए अनेक लोकानुभव प्राप्त किये।

साथ–साथ नीति विषयक दोहों की भी सृष्टि तैयार की। इनके नीति विषयक दोहे मानव व्यवहार के प्रत्येक पहलू को निःसंकोच छूते हैं और उन पर सशक्त आक्षेप करते हैं –

नर की अरु नल नीर की, एके गति कर जोई।
जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊंचौं होय।।

बिहारी ने सज्जनों की प्रशंसा की है और दुर्जनों की उपेक्षा करते हुए बताया कि समय के परिवर्तन के साथ मानव मन भी परिवर्तित हो गया है और अल्प बुद्धि या दुष्ट प्रवृत्ति के लोग समाज में सम्मान पाते हैं।

बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमानु।
भलो भलो कहिं छोडिये, खोटे ग्रह जप दान।।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

चूंकि बिहारी हमेशा से कहीं न कहीं दरबारी कवि रहे इसलिये उन्हें राज दरबारों का अच्छा खासा अनुभव था और धन–वैभव की चमक–दमक से वे अच्छे परिचित थे। उन्होंने धन के मद का सुन्दर चित्रण करते हुए लिखा कि –

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
उहि खाये बौराय जग, इहि पाये बौराय।।

यह एक कटु सत्य है कि सांसारिक विषय–वासनाओं की आसक्ति जीवन के वास्तविक सुख और शान्ति को नष्ट कर देती है और वह (भोग–विलास) एक ऐसा भ्रमजाल है जिसमें एक बार जब मन फँस जाता है तो वह उससे मुक्त नहीं हो पाता है बल्कि जैसे–जैसे उस जाल से निकलने का प्रयास किया जाता है, वैसे–वैसे उसमें उलझता चला जाता है –

को छूट्यो एहि जाल पर, कत कुरंग अकुलात।
ज्यों–ज्यों सुरझि भज्यो चहति, त्यों–त्यों उरझत जात।।

बिहारी ने समय के परिवर्तन के साथ होने वाले मानवीय व्यवहार के परिवर्तन और अन्धविश्वासों पर तीखा व्यंग्य किया है और कहा है कि समय विशेष पर और हमरे अज्ञानवश –

मरत प्यास पिंजरा परयो सुवा समय के फेर।
आदर दे दे बोलियतु, वायस बलि की बेर।।

कवि ने बताया कि इस संसार में मूर्खों की कोई कमी नहीं है किन्तु उन्हें पहचानने की आवश्यकता है अतः ज्ञानी को चाहिये कि वह गुण ग्राहकता का विशेष ध्यान रखे –

करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि।
रे गन्धी मति मन्द तू, इतर दिखावत काहि।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बिहारी ने लोक अनुभव की पूर्णता के माध्यम से सुन्दर नीति विषयक दोहों का सृजन किया है और लोक व्यवहार का अच्छा संदेश दिया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि बिहारी सतसई में श्रृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। तीनों ही प्रकार के दोहे अत्यन्त मार्मिक एवं अनुभूतिमय हैं। इस प्रकार की समन्वित भावधारा के कारण बिहारी का काव्य अत्यन्त प्रभावशाली व लोकप्रिय है।

प्रश्न 3 मुक्तक काव्य के रूप में 'बिहारी सतसई' की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

अथवा

सिद्ध कीजिये कि 'बिहारी सतसई' एक सफल मुक्तक काव्य है।

अथवा

'बिहारी एक सफल मुक्तक कवि थे' इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिये।

उत्तर – काव्य दो प्रकार के माने गये हैं – श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य में प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य दो भेद होते हैं। प्रबन्ध काव्य का एक भेद महाकाव्य भी कहा जाता है और मुक्तक काव्य में खण्डकाव्य, गीति काव्य, कथा, आख्यायिका आदि होते हैं। काव्य चाहे किसी भी प्रकार का हो, इनका सृजन प्राचीन काल से अनवरत रूप से चला आ रहा है। भक्तिकाल व रीतिकाल में मुक्तक काव्य धारा का विकास अधिक हुआ है जिसमें अनेक मुक्तक काव्यों का सृजन किया गया है। कवि बिहारी की प्रतिभा का संस्पर्श पाकर ये रचनाएँ और भी अधिक प्रभावशाली और लोकप्रिय बन गई हैं। अगर हम यह कहें कि मुक्तक काव्यधारा में बिहारी का अपना कोई आज तक सानी नहीं है तो इसमें किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं है। बिहारी ने दोहा, छन्द के मात्र चार लघु चरणों में काव्य कला के साथ जो गाम्भीर्य और लालित्य समाहित किया है और जो काव्य सौष्ठव प्रस्तुत किया है

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

वह अपने आप में शीर्षस्थ है और हम यह कहने में कतई नहीं हिचकिचायेंगे कि बिहारी की सतसई एक अनुपम कृति है।

मुक्तक काव्य स्वतन्त्र अर्थ स्पष्ट करने वाला होता है, यह ऐसी रचना होती है जिसमें कवि स्वेच्छानुसार विभिन्न वस्तुओं, दृश्यों एवं विचारों का पृथक–पृथक छन्दों में वर्णनात्मक चित्रण करता है और उसके लिये हर शब्द का संयोजन पूरे चमत्कार के साथ करता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मुक्तक काव्य को परिभाषित करते हुए कहा कि 'मुक्तककार एक–एक शब्द को सोचकर और संभल कर प्रयोग करता है, एक–एक वर्ण को सजाकर रखता है। प्रत्येक मात्रा को तौलकर लगाता है और इसी प्रकार एक ही दृष्टिपात में अपनी कला की पूर्ण चमत्कृति की चकाचौंध दिखा देता है, वस्तुतः, मुक्तक काव्य में जीवन की छोटी–छोटी अनुभूतियों का भावात्मक निरूपण होता है और प्रत्येक पद्यांश में कवि हृदय की अभिव्यक्ति मर्मस्पर्शी एवं भावप्रवण हो जाती है। ऐसी रचनाओं में प्रबन्ध काव्य का प्रवाह नहीं होता है। इस सभी विशेषतओं को देखकर आचार्य शुक्ल ने मुक्तक काव्य को एक 'चुना हुआ गुलदस्ता' कहा है। जिस प्रकार गुलदस्ते में भाँति–भाँति के रंग–बिरंगे फूल अपनी आभा बिखेरते रहते हैं और अपना अलग–अलग महत्त्व रखते हैं ठीक इसी प्रकार मुक्तक काव्य का प्रत्येक पद स्वतंत्र सौन्दर्य, पृथक विषय, मुक्त भाव को व्यक्त करने वाला होता है। मुक्तक काव्य के सन्दर्भ में हम यह कह सकते हैं कि –

अ. मुक्तक काव्य में छन्द अपने पूर्ण भाव को व्यक्त करता है जिसमें रसोद्रेक की पूर्ण क्षमता होती है।
ब. मुक्तक का प्रत्येक पद पूर्वापर सम्बन्धरहित होता है।
स. मुक्तक काव्य में समास शैली और समाहार शक्ति दिखाई देती है।
द. भाषा में कोमलता, प्रखरता, गम्भीरता एवं लालित्य रहता है।
य. बिम्बमयता एवं नाद सौन्दर्य का भी समावेश होता है।
र. कवि–कल्पना का चमत्कार एवं व्यंग्यात्मकता की प्रखरता इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

मुक्तक काव्य की इन सम्पूर्ण विशेषताओं को ध्यान में रखकर यदि हम कवि 'बिहारी सतसई' का अवलोकन करें तो यह एक सफल मुक्तक काव्य होगा। बिहारी 'सतसई' की मुक्तक सम्बन्धी विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिये –

1 अभिव्यक्ति की पूर्णता – कविवर बिहारी का हर दोहा पूर्ण भाव, अनुभूति, घटना अथवा पूर्ण प्रसंग का अर्थ समाविष्ट किये हुए है और अर्थ की दृष्टि में बिहारी का प्रत्येक दोहा अपने आप में पूर्ण है –

'कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
इहि खाये बौराय जग उहि पाये बौराय।।'
अति अगाध अति ओथरो, नदी कूप सर बाय।
सो ताको सागर जहाँ, ताकी प्यास बुझाय।।

इन दोनों का पूर्वापर से कोई सम्बन्ध नहीं है प्रत्येक दोहा का सम्बन्ध अलग–अलग संदर्भ से जुड़ा हुआ है। यही विशेषता बिहारी की सबसे बड़ी सफलता है।

2. भाषा की सामासिकता – भाषा शैली में सामासिकता बिहारी की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता है। कम से कम भावों में अधिक से अधिक अभिव्यक्ति इनकी शैली में है। बिहारी के छोटे दोहों के कलेवर में अधिकाधिक भाव समाहित हैं और यही वह कारण है जिसकी वजह से बिहारी की रचना गागर में सागर भरने वाली मानी गई है। सामासिक शैली का उदाहरण –

कहत नटत रीझत खिजत, मिलत खिलत लजियात।
भरे मौन में करत हैं, नैनन ही सों बात।।

प्रस्तुत उदाहरण मात्र 48 मात्रा के दोहा छन्द में प्रेमी व प्रेमिका की प्रेम चेष्टाओं का सामासिक भाषा में सुन्दरतम चित्रण प्रस्तुत किया है –

दृग उरझत टूटत कुटुम, जुड़त चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति।।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

3. कल्पना की समाहार शक्ति – कवि बिहारी की कल्पना शक्ति के आधार पर एक ऐसा जादुई आकर्षण समाहित हुआ है जिसके प्रभाव से प्रत्येक पाठक कवि की रचनाओं का हो जाता है। उन्होंने जिस कल्पनाशील और सरस व्यक्तित्व का परिचय दिया है उसे अनेक प्रसंगों में देखा जा सकता है–

छिप्यौ छबीली मुँह लसै, नीले अंचल चीर।
मनो कलानिधि झलमलै, कालिन्दी के नीर।।

प्रस्तुत उदाहरण में गौरांगना का चन्द्रमुख नीली सारी के घूंघट में कालिन्दी के जल में उसकी सुन्दर परछाई सा झिलमिला रहा है इसी प्रकार नायिका के आभूषणों की शोभा के लिये भी कवि ने अपनी सुन्दर कल्पना का परिचय दिया है –

मानहुँ विधि तन अच्छ छवि, स्वच्छ राखिवे काज।
दृग पग पौछन को कियो, भूषण पायंदाज।।

इसी प्रकार एक नायिका अपने प्रियतम की मधुर बातों के आनन्द की लालची का सुन्दर मनोभाव व्यक्त किया है –

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौहनि हँसे, देन कहै नट जाय।।

4. सुकोमल और प्रखर भाषा का प्रयोग – भाषा की सरलता, मधुरता और उसका प्रभावशाली गुण मुक्तक काव्य के लिये अत्यन्त अनिवार्य होता है। कविवर बिहारी ने मुक्तक काव्य के इस दृष्टिकोण को प्रगावशाली बनाया है–

अंग अंग नग जगमगै, दीपशिखा सी देह।
दिया बढाए हूँ रह्यो, बड़ो उजेरो होय।।

भाषा की सुन्दरता और प्रखरता को कहीं–कहीं अलंकार योजना के द्वारा भी रोचक और कर्णप्रिय बना दिया गया है –

सोहत औढे पीत पट स्याम सलौने गात।
मनो नील-मनि सैल पर, आतप परयो प्रभात।।

बिहारी की एक विशेषता यह भी रही कि उनकी भाषा सरल होते हुए भी अत्यन्त प्रभावशाली है भाषा शैली के कारण ही जयपुर नरेश जयसिंह प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी देते थे –

नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास ऐहि काल।
अली कली ही सो बन्ध्यो आगे कौन हवाल।।

यह कहावत सर्वत्र प्रसिद्ध है कि बिहारी सतसई तो शक्कर की रोटी है, जिधर से तोड़ो उधर से मीठी है।

5. बिम्बात्मकता एवं नाद सौन्दर्य – जहाँ एक ओर बिहारी के दोहों में चित्रात्मकता परिलक्षित होती है वहीं दूसरी ओर वह बिम्ब प्रधान साहित्य भी है जो पाठकों के मानस पर एक सुन्दर चित्र उभारने में सक्षम है और बिहारी में चित्रात्मकता की सशक्त अभिव्यक्ति दी है –

सघन कुंज धन, धन तिमिरु, अधिक अंधेरी राति।
तउ न दुरि है स्याम वह, दीप शिखा सी जाति।।

इसी प्रकार कवि बिहारी ने एक विरह विदग्धा नयिका की स्थिति का अति सुन्दर चित्र उभार कर प्रस्तुत किया गया है –

इत आवत चलि जात उत, चलि छ सातक हाथ।
चढी हिण्डोरे सी रहे, लगी उसासनु साथ।।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कवि बिहारी ने अपने दोहों में नाद सौन्दर्य को भी समाहित किया है। उनकी ध्वन्यात्मकता एवं सरसता सर्वत्र प्रशंस्य है और काव्यानन्द की वृद्धि की है –

रुनित भृंग घण्टावली, झरत दान मधु मीर।
मन्द मन्द आबत चल्यो, कुन्जर कुंज समीर।।

इसी प्रकार एक प्रेमी नायिका की गली से गुजरता है तो नायिका उसे किस तरह निहारती है का सुन्दर चित्रण –

सटपटाति–सी ससिमुखी, मुख घूँघट पट ढाँकि।
पावक झर सी झमक के, गई झरोखा झाकि।।

कवि बिहारी ने इसी कलात्मकता से ओतप्रोत दोहे में श्रीकृष्ण की आभा का मनोरम चित्रण किया है और उनके होठों पर विराजमान मुरली की छवि का कलात्मक रूप प्रस्तुत किया है –

अधर धरत हरि के परत ओठ दीठ पट जोति।
हरित बाँस की बासुरी, इन्द्र धनुष सी होति।।

मुक्तककार बिहारी का व्यंग्य प्रयोगों में भी किसी प्रकार का सानी नहीं हैं उन्होंने जयपुर दरबार में रहकर के महाराज जयसिंह को लक्ष्य बनाकर अनेक व्यंग्यात्मक दोहों का सृजन किया था और अन्योक्ति का सुन्दर प्रयोग किया। अन्य कई ऐसे प्रसंग रहे जिनमें कवि में चमत्कारिक ढंग से व्यंग्यात्मक दोहे हैं –

स्वारथु सुकृत न श्रम वृथा देखि विहंग विचार।
बाज पराये पानि परि तू पाच्छिन मत मार।।
नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास एहि काल।
अली कली ही सौं बन्ध्यो आगे कौन हवाल।।

6. रसोद्रेक का समावेश – यह मुक्तक काव्य की एक महत्ती विशेषता मानी जाती है कि रचना में रसोद्रेक होना चाहिये। रसोद्रेक की क्षमता जितनी अधिक होगी, वह रचना उतनी ही प्रभावशाली मानी जायेगी। बिहारी रससिद्ध कवि थे। उन्होंने श्रृंगार विषयक का पर्याप्त प्रणयन किया है। विशेष बात तो यह है कि चार चरणों वाले छोटे दोहा छन्द में विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का सामूहिक परिपोष करना जो अपने आप में एक कठिन कार्य है, उसे बिहारी ने बड़ी आसानी से सफल किया है। उन्होंने कहीं पर मात्र अनुभाव से अथवा विभाव एवं सात्विक भावों के वर्णन मात्र से रसोद्रेक की क्षमता को प्रस्तुत किया है। इस प्रसंग में विरहिणी नायिका –

कर के मीडे कुसुम लों गई विरह कुम्हलाय।।
सदा समीपिनि सखिन हुं नीति पिछानी जाय।।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि 'बिहारी सतसई' में मुक्तक काव्य की सभी विशेषताएँ हैं जिसमें रसानुभूति, व्यंजना वैभव, कल्पना की समाहार शक्ति, भाषा की समास शक्ति, नाद सौन्दर्य, अर्थ गाम्भीर्य एवं वाक्पटुता का जो समावेश हुआ है वह अति प्रशंसनीय है।

प्रश्न 4 'बिहारी सतसई' का अलंकार–विधान अत्यन्त कलात्मक है और साथ में चमत्कार से परिपूर्ण है। इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

अथवा

बिहारी की अलंकार योजना की समीक्षा कीजिये।

उत्तर – कविवर बिहारी रीतिकालीन काव्य धारा के अग्रणी कवि माने गये हैं उनके काव्य का भाव–पक्ष जितना सशक्त रहा है उतना ही कला–पक्ष भी अत्यन्त समृद्ध रहा है। वस्तुतः, किसी काव्य की श्रेष्ठता मात्र भावों की उत्कृष्टता से ही नहीं होती है वरन् वह बहुत कुछ कलात्मक अभिव्यक्ति पर भी निर्भर रहती है। काव्य का कला–पक्ष वह माध्यम है, जिसके द्वारा भावों की अभिव्यक्ति होती है और उनका पाठकों तक सम्प्रेषण होता है। इसके अन्तर्गत अलंकार योजना का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। साहित्यशास्त्री इस बात को मानते हैं कि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सहज सौन्दर्य के लिये अलंकार एक विशिष्ट उपादान हैं। एक बात और यह है कि रीति धारा के अधिकतर कवि विशुद्ध रूप से रसवादी या अलंकारवादी कवि थे। कव्य–शिल्प में अलंकारिक चमत्कार की स्थिति और भी आवश्यक मानी गई है जो बिहारी के काव्य में स्पष्ट दिखाई देती है।

वैसे तो 'अति सर्वत्र वर्जयेत' के अनुसार काव्य में भी अलंकारों का आधिक्य सौन्दर्य को विकृत कर देता है और उक्ति में क्लिष्टता आ जाती है फिर भी यह उतना ही सत्य है यदि किसी काव्य में अलंकार योजना का समुचित उपयोग नहीं किया जाये तो उनका काव्य सौष्ठव पाठक के समक्ष अत्यन्त निखरे हुए रूप में ही प्रस्फुटित होता है। वस्तुतः कवित्व शक्ति से युक्त कलाकार ही अलंकारों के द्वारा अपने काव्य सौष्ठव को बढ़ाने में सफल होते हैं। कवि बिहारी एक सफल कलाकार माने जाते हैं उनकी अलंकार योजना की सशक्तता 'सतसई' में खुद–ब–खुद अपना परिचय देते हैं। उन्होंने अनुप्रास, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक, अन्योक्ति, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का काफी सीमा तक सफल उपयोग किया है। कवि बिहारी के काव्य में निहित अलंकार योजना का विस्तृत रूप निम्नलिखित अलंकारों के उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है –

1. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग – कवि बिहारी ने अनेक स्थलों पर नाद सौन्दर्य एवं गत्यात्मकता की दृष्टि से अनुप्रास अलंकार का अत्यन्त सफल प्रयोग किया है –

"दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर–चित प्रीति।
परति गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति।।"
"कहलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ।
जपतु तपोवन सौ कियो, दीरघ दाघ निदाघ।।"

प्रस्तुत उदाहरणों में वर्णावृत्ति दृष्टव्य रही है।

2. यमक अलंकार का प्रयोग – जब एक ही शब्द की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो और हर बार उसका अर्थ अलग निकलता हो, तो वह यमक अलंकार होता है। कवि बिहारी ने इस अलंकार में अपनी रुचि अधिक दर्शायी है और इसके प्रयोग के साथ–साथ उन्होंने अर्थ गाम्भीर्य का भी समावेश किया –

लाज कहौं बेकाज कत, घेरि रहे घर जाहि।
गोरस चाहत फिरत हो गोरस चाहत नाहि।।
कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
इहि खाये बौराय जग, उहि पाये बौराय।।

यमक अलंकार के सभंगपद प्रयोग भी बिहारी की रचनाओं में अधिक मिल जाते हैं यथा –

तंत्री नाद, कवित्त रस, सरस राग रति, रंग।
अन बूडे–बूडे तरै, जै बूडे सब अंग।।

3. श्लेष अलंकार का प्रयोग – जब एक ही शब्द में अलग–अलग संदर्भ के अलग–अलग अर्थ निहित हों और उस शब्द का प्रयोग केवल एक बार ही किया गया हो, वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है। कवि बिहारी ने इस अलंकार का प्रयोग बड़ी कुशलता के साथ किया है उन्होंने अतिशय प्रचलित शब्दों की श्लिष्ट योजना कर के अपने काव्य में रोचकता, कर्णप्रियता और चमत्कार उत्पन्न किया है।

अजौ तर्योना ही रह्यो, स्तुति सेवत इक रंग।
नाक वास बेसर लह्यो, बसि मुकतन के संग।।

प्रस्तुत उदाहरण में 'तर्योना', 'स्तुति', 'नाकवास' और 'बेसर' शब्दों का श्लिष्ट प्रयोग कवि कल्पना का उत्कृष्ट परिचायक है –

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होय।।

प्रस्तुत उदाहरण में 'स्याम' और 'हरित' शब्दों की श्लिष्ट योजना में पर्याप्त चमत्कार समाहित है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

4. उपमा अलंकार का प्रयोग – जहाँ पर उपमेय की उपमान से तुलना की जाती है और अर्थालंकार के चारों तत्त्व (उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और साधारण गुण धर्म) संन्निहित हों, वहाँ पर उपमा अलंकार होता है। कवि बिहारी ने अपने लघु आकृति वाले दोहों में उपमा अलंकार का रोचक व सफल प्रयोग किया है –

"अधर धरत हरि के परत, ओठ दीठ पर जोति।
हरित बाँस की बासुरी इन्द्र धनुष सी होति।।"
"अंग अंग नग जग मगै, दीप शिखा–सी देह।
दिया बढायो हूँ रहे, बडो उजेरो होय।।"

5. रूपक अलंकार का प्रयोग – जब उपमेय में उपमान का आरोप कर दिया जाये तो रूपक अलंकार होता है। कवि बिहारी ने सांगरूपक की योजना में विशेष सफलता प्राप्त की है और दोहे जैसे लघु छन्द में इस अलंकार का प्रयोग निश्चित रूप से कठिन होता है –

खौरि–पनिच भृकुटि–धनुष, बधिक–समऊ तजि कानि।
हनतु तरुन–मृग तिलक–सट, सुरक भाल भरि तानि।।

सांसारिक बन्धनों से मुक्ति पाने के लिये विषय वासना के परित्याग का संदेश देने में भी कवि ने इसी अलंकार का प्रयोग किया है –

"जमकरि मुँह तरहरि पर्‌यो इहि धरि चित हरि लाउ।
विषय–तृषा परिहरि अजौ, नरहरि के गुन गाऊ।।"
"अरुन सरोरुह–कर चरन, दृग खंजन मुख चन्द।
समय आय सुन्दर सरद, काहि न करत अनन्द।।"
"तो लागि या मन सदन में, हरि आवे किहिं वाट।
विकट जटे जौ लगि निपट, खुले न कपट कपाट।।"

6. उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग – जहाँ पर उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की जाये तथा मानो, मनहु, जानो, जनहुं आदि शब्दों का प्रयोग किया जाये वहां पर उत्प्रेक्षा अलंकार है। कवि बिहारी ने रूपक अलंकार की भांति उत्प्रेक्षा का भी सुन्दर प्रयोग किया है। श्रीकृष्ण की रूप छटा को उन्होंने उत्प्रेक्षा के माध्यम से वर्णित किया है –

मोर मुकुट की चन्द्रिकन यो राजत नन्द नन्द।
मनु ससि सेखर की अकस, किय सेखर सत चन्द।।
सोहत ओढे पीत पट, स्याम सलौने गात।
मनो नील मनि सैल पर आतप पर्‌यो प्रभात।।
मनहु विधि तन अच्छ छवि, स्वच्छ राखिवे काज।
दृग पग पौछनि को किये, भूषण पायंदाज।।

7. अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग – जब किसी उपमेय का वर्णन इतना अधिक बढा–चढा कर किया जाये कि सीमा या मर्यादा का उल्लंघन हो जाता हो वहां पर यह अलंकार होता है विरह वर्णन में बिहारी ने कुछ स्थलों पर अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया है जिसके माध्यम से विरह–वेदना की तीव्रता को प्रकट करने का प्रयास किया गया है –

इत आबति चलि जाति उत, चली छ सातक हाथ।
चढी हिण्डोरे पे रहे, लगी उसाँसनु साथ।।
आडै दे आले वसन, जाडे हूँ की रात्रि।
साहस करि के नेह–बस, सखी सबै ढिग जाति।।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

8. अन्योक्ति अलंकार का प्रयोग – दूसरों पर ढाल कर कहा गया कथन अन्योक्ति कहलाता है। कवि बिहारी ने इस अलंकार के प्रयोग में महारथ प्राप्त किया है। अपने आश्रयदाता महाराज जयसिंह को उद्देश्य बनाकर सृजित दोहा–

नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास एहि काल।
अली कली ही सों बन्ध्यों, आगे कौन हवाल।।

ऐसा कहा जाता है कि जयपुर नरेश ने इस एक मात्र दोहे पर एक लाख अशर्फी देकर सम्मानित किया–

स्वारथु सुकृत न श्रम वृथा देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि परि, तू पच्छीनु न मारि।।
जिन दिन देखे वे कुसुन, गई सो बीति बहार।
अब अली रही गुलाब में अपत कटीली डार।।
मरत प्यास पिंजरा पर्‌यो सुवा समय के फेर।
आदर दे दे बोलियत, वायस बलि की बेर।।

9. परिकर अलंकार का प्रयोग – साभिप्राय विशेषणों का प्रयोग करके कवि बिहारी ने परिकर अलंकार की अच्छी योजना समायोजित की है, यथा–

कबहूँ को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुम हूँ लागी जगत् गुरु, जग नायक जन बाय।।

10. काव्यलिंग अलंकार का प्रयोग – सहेतुक काव्यार्थ का उपन्यास करने में काव्य लिंग अलंकार होता है। कवि बिहारी ने ऐसे अलंकारों का प्रयोग भी अपने काव्य में किया है–

पत्रा ही तिथि पाइये, वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पून्यो ही रहति, आँगन ओप उजास।।

11. विरोधाभास अलंकार – उक्ति चमत्कार का अधिक ध्यान रखने में कवि बिहारी ने कई दोहों में इस अलंकार का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है –

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों–ज्यों बूड़ै स्याम रंग, तेतों उज्ज्वल होय।।

12. संसृष्टि अलंकार का प्रयोग–कवि बिहारी ने अपने काव्य के छोटे–छोटे दोहों में अनेक–अनेक अलंकारों का प्रयोग किया है जिससे काव्य में रोचकता व चमत्कार उत्पन्न हो गया है–

नर की अरु नल नीर की, गति एकै कर जोई।
जेतो नीचो व्है चलै, त्यों–त्यों ऊँचो होय।।

इस उदाहरण में उपमा, विरोधाभास, दीपक और श्लेष अलंकार का सामूहिक प्रयोग किया गया है।

3.3 सारांश

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि बिहारी के काव्य में अलंकार योजना प्रशंसनीय है। श्रृंगारिक कवि होने के कारण उन्होंने प्रत्येक दोहे में अलंकारों का सन्निवेश करने का प्रयास किया है साथ ही अपनी विलक्षण प्रतिभा एवं वाग् वैदग्ध्य को समाविष्ट किया है जिसमें वे पूर्णतया सफल रहे हैं। बिहारी के काव्य में कला पक्ष काफी सशक्त और चमत्कारिक बन गया है और इस दृष्टि से बिहारी का सतसई एक सफल काव्य है।

3.4 अभ्यास प्रश्नावली

1. बिहारी के सतसई काव्य के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
2. कवि बिहारी के नीति वर्णन को स्पष्ट कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun